श्रीयुत पंडित केशरी नाथ त्रिपाठी के उनके 68वें जन्म दिवस पर

तुम सलामत रहो हज़ार बरस........

विधि, राजनीति तथा साहित्य के त्रिवेणी पुरुष
माननीय पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी को
उनके जन्म–दिवस (10 नवम्बर) पर
'विश्व स्नेह समाज' परिवार की ओर से
सादर मंगल–कामनाएँ और हार्दिक बधाइयाँ

माननीय पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी,
विधानसभाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

विगत पॉच वर्षो से समाज सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित

जी.पी.एफ.सोसायटी

(गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी)

एल.आई.जी. 93, नीमसराय कॉलोनी, मुण्डेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद

आपसे विभिन्न स्थानों पर संचालित :

0अंध विद्यालय 0विकलांग केन्द्र 0शिक्षा केन्द्र के लिए

आर्थिक/समाजिक/शारीरिक/कपड़े या अन्य सामग्री की सहयोग की अपील करता है। आपके द्वारा प्राप्त सहयोग समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में खर्च किया जाता है, जिसकी आप जानकारी कार्यालय से प्राप्त कर सकते है।

आपका छोटा–सा सहयोग, आपका छोटा–सा पैसा
करेगा आपके किसी भाई–बहन, बच्चे की सेवा।।

प्रस्तावित अनाथालय व बृद्धआश्रमः
ग्राम –टीकर, पोस्ट–टीकर, (पैना)
जिला –देवरिया

क्यों होने लगी लक्ष्मी की पूजा

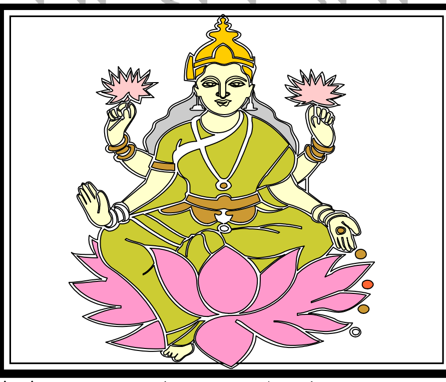

☞शिव प्रसाद 'कमल'

भारतीय संस्कृति में लक्ष्मी पूजन की परंपरा सदियों से चली आ रही है। इस संबंध में पौराणिक कथाओं के अंतर्गत अनेक आख्यान मिलते है। वेंदो में भी देवी लक्ष्मी की अवधारणा के बीज उपलब्ध हैं। अब प्रश्न उठता है कि भारतीय समाज में लक्ष्मी का प्रवेश कब हुआ तथा इन्हें सुख–समृद्धि की देवी के रुप में कैसे मान्यता मिली? इस प्रश्न का एकदम निश्चित एवं सही उत्तर नहीं दिया जा सकता। लेकिन मोहनजोदड़ो सभ्यता से जो लक्ष्मी की मूर्ति मिली है, उससे प्रतीत होता है कि उसक समय से ही देवी लक्ष्मी भारतीय समाज में घुल–मिल गई थी।

एक दीपक काफी है, अंधरे से लड़ने के लिए

एक दीपक काफी है, अंधेरे से लड़ने के लिए। यह फलसफा सिर्फ हमारा नहीं, पूरी दुनिया का है। देवता को दीपदान से पवित्र और कुछ नहीं। वास्तव में दुनिया की हरेक सभ्यता ने अपनी आत्मा को अग्नि का अंश समझा। दीपदान, अपने देवता को अपनी आत्मा का दान ही है। इस भाव के तमाम प्रतिबिंब हमें संसार भर में देखने को मिलते हैं। हमारे देश के अलावा दुनिया के कई मुल्को में भी दीपावली जैसे पर्व हर्ष उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। मोहनजोदडो की खुदाई से ऐसे ताम्रपत्र मिले है, जिनमें उगते सूर्य के चारों ओर दीप बने हैं। इन ताम्रपत्रों से साबिता होता है कि सूर्य की प्रेरणा से ही दीपों का उद्गम हुआ है।

प्राचीन यूनान की संस्कृति के अनुसार आधुनिक रोम में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वर्ष में एक बार सुगंधित धूपबत्ती के साथ दी जलाए जाते हैं। यहां की मान्यता के अनुसार प्रेम की देवी 'वीनस' जलते दीपों को देखकर बड़ी प्रसन्न होती है। प्रेम की देवी के आह्वान के लिए 14 फरवरी यानी वेलेटाइंस डे से ज्यादा बेहतर दिन कौन सा हो सकता है! इस दिन प्रेमी, वीनस की मूर्ति के आगे जगमगाते दीपदान करते हैं। इस दिन यहां का दीपों से जगमगाता नजारा दीपावली जैसा प्रतीत होता है।

आस्ट्रेलिया में खेल प्रेमी के मैदानों पर अपनी जीत का सामूहिक जशन हर वर्ष 22 दिसम्बर को मनाते हैं। जगह–जगह तोरण द्वार बनाकर उन्हें अलबेले तरीके रोशनी से सजाया

जाता है। समुद्र तटों पर आतिशबाजी की जाती है। ताकि नगर के आवासीय क्षेत्रों में प्रदूषण न फैले। इसी दिन यहां घर–घर वृक्षारोपण की भी प्रथा है।

जर्मनी में हर वर्ष 23 सितम्बर को अपने पूर्वजों को दीपदान करने की प्रथा है। इस मौके पर वहां का माहौल दीप पर्व जैसा प्रतीत होता है। प्रत्येक वृक्ष पर मोमबत्ती लटका कर रोशनी की जाती है। बच्चे आतिशबाजी करते हैं। दक्षिण अफ्रिका के आदीपासी भी दीपावली जैसा पर्व मनाते हैं। वे अपनी अजीबोगरीब झोपड़ियों पर लंबी–लंबी मशालें जलाते है। यहां जलती मशालों से रोशनी करने का मतलब है 'अंधेरे से सघर्ष करों'।

जापान में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह मे फसल पकने की खुशी में खूब आतिशबाजी की जाती है। रात में आसमान में बड़े–बड़े गुब्बारे छोड़े जाते हैं तथा बड़ी–बड़ी पतंगे उड़ाई जाती है। इन गुब्बारों और पतंगो के साथ रंगबिरगी मोमबत्तियों को भी बांधकर उड़ाया जाता है। थाईलैंड में वर्षा के उपरांत देवी–देवताओं को दीपदान करने की प्रथा है। यहां आटे से बड़े–बड़े दीप बनाकर केले के पत्तों पर रखकर नदी और सरोवरों में प्रवाहित किए जाते है ताकि आने वाला मौसम फसल के लिए खुशनुमा हो।

इंडोनेशिया में हमारे देश की दीपावली के दिन दीप पर्व मनाया जाता है। इस दिन यहा गणपति के साथ लक्ष्मी और सरस्वती पूजन भी किया जाता है। अमेरिका में यह दिन 'विकास पर्व के रुप में मनाया जाता है। यहा यह पर्व प्रतिवर्ष नवंबर के तीसरे सप्ताह मे मनाया जाता है। यहां के नागरिक अपनी दुकानों व घरों में खूब रोशनी करते है।

रुस में 1 मई के दिन जगह–जगह खूब रोशनी और आतिशबाजी की जाती है। यहा मई दिवस दीपावली की ही भांति मनाया जाता है। इस दिन यहां मे मजदूरों को तोहफें भेट किए जाते हैं। सेना के जवान मैदान में जाकर तोप चलाते है और हवाई फायरिंग करते है। चीन में यह पर्व 'फूलों वाला दिन' के नाम से जाना जाता है।

लक्ष्मी की उत्पत्ति कब और कैसे हुई, इस पर कोई एकराय नहीं है। पुराणों के अनुसार, देवों और असुरों के आपसी सहयोग से हुए समुन्द्र मंथन में जिन चौदह रतनों की उत्पत्ति हुई थी, उनमें से लक्ष्मी भी एक थी। आगे चलकर ये विष्णु की पत्नी बनी। विष्णु के 'लक्ष्मीपति' कहलाने का यही कारण है। पुराण काल में ही लक्ष्मी को सुख–समृद्धि की प्रदात्री मानकर, इनके पूजन की परंपरा चल पड़ी। लक्ष्मी की पूजा के शुरु होने के तमाम कारणों का अनुमान लगाया जाता है। प्रतीत होता है कि लक्ष्मी पूजन का महत्व बढ़ने एवं राजवंशो द्वारा अपनी मुद्राओं पर इन्हें चित्रित कराए जाने के कारण, कालांतर में लक्ष्मी को धान की देवी की मान्यता मिल गई। दीपावली के अवसर पर धान आदि की नई फसल आ जाती है। अतः लक्ष्मी के साथ धन–धान्य, सौभाग्य, सुख–समृद्धि का संबंध जोड़कर, दीपोत्सव के साथ–साथ लक्ष्मी पूजन की परंपरा भी विकसित हुई। दीपावली पर कृषि एवं वाणिज्य के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए भी लक्ष्मी लोक में सहज रुप से मान्य हो गई और व्यापार तथा वाणिज्य से जुड़े वैश्य आदि दीपावली पर लक्ष्मी पूजन करने लगे। अब प्रश्न ये हैं कि दीपावली पर लक्ष्मी पूजन के साथ गणेश का पूजन कब और कैसे आंरभ हुआ? इसके बारे में यही कहा जा सकता है कि गणेश विध्नेश्वर–विनायक हैं और व्यापार तथा वाणिज्य को निरापद रखने के लिए प्राकृतिक विघ्न–बाधाओं के निर्मूलन हेतु, दीपोत्सव पर सहज ही वे लक्ष्मी पूजन के साथ जूड़ गए।

इस प्रकार दीपावली हर्ष उल्लास के साथ व्यापार–वाणिज्य से जुड़ गई तथा इस अवसर पर सुख–समृद्धि के हेतु लोक में गणेश एवं लक्ष्मी पूजन की परंपरा चल पड़ी। प्राचीन काल की लक्ष्मी, विष्णु की अर्द्धागिनी होते हुए भी, दीपावली के प्रकाश पर्व पर गणेश के साथ पूजित हो गई।

रहमतों का महीना–रमज़ान

बिरजीस फ़ातिमा

रमजान का महीना इस्लाम का पवित्र महीना है। इसी महीने में कुरान शरीफ दुनिया में हज़रत जिबरईल (फरिश्ता) द्वारा मोहम्मद साहब पर नाज़िल हुआ था। इस किताब में इनसान व इनसानियत के लिये ईश्वर का कानून मिलता है।

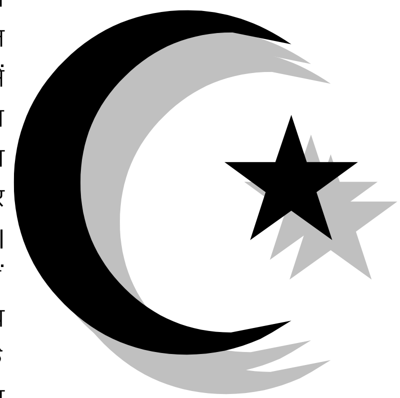

रोज़े का चाँद दिखने के बाद दूसरे दिन सूरज निकलने के करीब 2 घन्टे पहले से सूरज डूबने के बाद तक 30 दिन का रोज़ा शुरु हो जाता है। रोज़ा रखने वाला व्यक्ति रोज़ेदार कहलाता है।

रोज़ा रखने के फायदे

1. रोज़ा इनसान को बुराइयों से बचाता है। रोज़ेदार दिन भर न कुछ खाता है ना कुछ पीता है। वह कोई नशा नहीं करता, कोई गलत काम नहीं करता।

2.रोज़ा इनसान को अनुशासन सिखाता है।

3. सुबह से शाम तक कुछ न खाने पीने के कारण मेदे को आराम मिलता है।

4.रोज़ा रखने से भूख और प्यास का एहसास होता है। रोज़ेदार को मालूम रहता है कि भूख–प्यास क्या होती है तथा उसे उसकी मदद करने का जज्बा होता है।

इस्लाम में ईश्वर ने दो तरह का टैक्स रखा है–

1. फितरा 2 . ज़कात

फितरा– परिवार में जितने सदस्य हैं, चाहे वह एक दिन का बच्चा ही क्यों न हो, सब पर फर्ज़ है। यह सवा दो किलो गेंहूँ के बराबर है। इसे प्रत्येक सदस्य के नाम से जोड़ कर ऐसे आदमी की देना चाहिए। जो बहुत गरीब हो, जिसके पास खाने–पहनने के लिए भी न हो, ताकि वह भी ईंद मना सके।

जक़ात– जिसके पास साढ़े सात तोला सोने की कीमत से अधिक माल हो, उस पर यह फर्ज़ लागू होता है। पूरी रकम का ढाई प्रतिशत जोड़ कर किसी जरुरत मन्द को यह रक़म दी जाती है, ताकि वह भी ईंद मना सके।

तीस दिन तक रोज़ा रखने के बाद ईंद मनाई जाती है और अपने रब का शुक्रिया अदा किया जाता है। ईंद का दिन दूसरे से मिलने का दिन होता है।

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो ईश्वर व बन्दे के बीच होती है। इसको केवल ईश्वर व बन्दा ही जानता है कि उसने ईश्वर के कानून का पालन किया या नहीं।

असंतुलित होता पर्यावरण: दोषी कौन?

डॉ. सुधीर कुमार त्रिपाठी

बढ़ती आबादी के साथ–साथ प्रदुषण की समस्या भी इसी रफ्तार से बढ़ रही है। आइए, डाले इस पर एक नज़र ।

दिनों दिन शहरों पर बढ़ती आबादी के दबाव में पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण का अर्थ है प्रकृति के सभी भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणों के समूह तथा उ नके बीच अन्तर्सम्बन्ध जो समस्त प्राकृतिक क्रियाओं को चलाते हैं। पृथ्वी के चारों ओर जो भी सजीव तथा निर्जीव घटक है ये सब आपस में मिलकर पर्यावरण का ताना बाना बुनते हैं तथा जीवन की क्रियाओं को चलाने में मदद करते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित पंचतत्व धरती, जलअग्नि, आकाश एवं वायु ही हमारे पर्यावरण धरती, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु ही हमारे पर्यावरण के मुख्य ढांचे को बनाते हैं परन्तु विगत बीस वर्षो से हमारी बढ़ती आबादी, अनियमित औद्योगीकरण एवं नगरीकरण, वनों की अंधाधुध कटाई तथा विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में पर्यावरण पहलुओं की ओर ध्यान न देने के कारण संतुलन बिगड़ना शुरु हो गया। यूं तो संतुलन बनानो का प्रयास प्रकृति स्वयं करती है परन्तु प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ा और प्रदूषण बढ़ा। सत्य ही है, प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सकती है लेकिन प्रकृति प्रत्येक के लोभ की पूर्ति नहीं कर सकती।

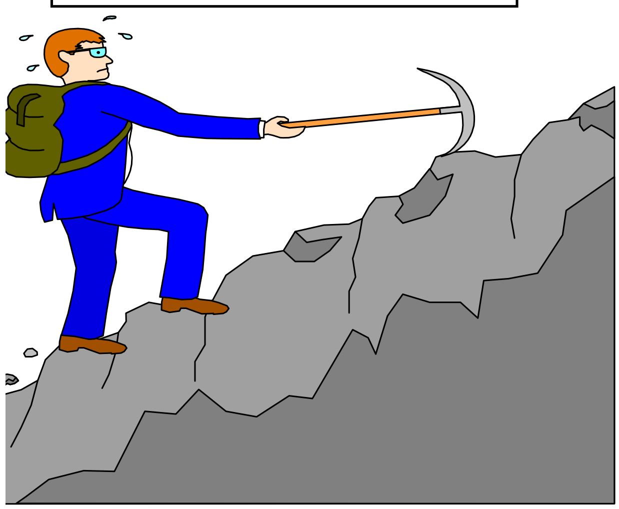

पर्यावरण को मुख्यतया तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम प्राकृतिक पर्यावरण– इसमें हवा, पानी, पर्वत, भूमि, वृक्ष नंदिया वनस्पतियां एंव जीव जन्तु आदि है। द्वितीय मनुष्यों द्वारा निर्मित पर्यावरण इसमें शहर, विभिन्न औद्योगिक एवं मानव निर्मित प्रतिष्ठान, मकान यातायात उद्योग कृत्रिम जल संसाध ान आदि हैं।

तृतीय में सामाजिक पर्यावरण हैं। इसके अन्तर्गत, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था एवं उनका मानव पर प्रभाव जैसे जनसंख्या बृद्धि, रोजगार वाणिज्य संस्कृति आदि है। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में विज्ञान और तकनीक की महत्वपूर्ण खोंजो ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। हमारे देश में भी उन्नीसवीं सदी के अन्त से बड़े उद्योगों की स्थापना शुरु हुई। उद्योगों ने जहां एक ओर रोजगार के नये अवसर प्रदान किए, देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ की, वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण का विनाश भी किया। घने जंगल काटकर कृषि का विकास व उद्योग स्थापित किए गये। एक तरफ लाखों हजारों पेड़ कटे तो दूसरी तरफ प्राकृतिक वातावरण में विभिन्न गैंसे और कचरें मिलने लगे। कच्चे माल के लिए खानें तैयार की गई, पेड़ काटे गये एवं खनिज पदार्थो का उपयोग करने वाले दूसरे उद्योग खड़े किये गये। पर्यावरण का विनाश इनसे से भी हुआ। बड़े–बड़े उद्योग लगे तो मजदूर हुए और इस कारण उनका परिवार भी हुआ। यानी मिलजुल कर धीरे–धीरे एक बड़ा शहर बन जाता है। लोंगों का जीवन स्तर सुधरने के बाद सुविधाएं भी बढ़ती हैं। विभिन्न प्रकार के वाहन, विद्युत आपूर्ति, जल आपूर्ति, वातानुकूलन संयत्र तथा और कई सुविधाएं जीवन को सुगम बनाती है, परन्तु साथ में ये सभी पर्यावरण को कहीं न कहीं से नुकसान भी पहुंचाती हैं। पिछले कुछ वर्षो के अनुसंधान से स्पष्ट है कि पर्यावरण के विभिन्न अवयवों को विभिन्न मानवीय क्रियाओं द्वारा बहुत नुकसान पहुंचा है। इसी कारण आज के दौर में पर्यावरण को साफ सुथरा और हरा–भरा रखने की कोशिश होती रहनी चाहिए। पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले कारकों में प्रदूषण का प्रमुख योगदान है। पर्यावरण के विभिन्न अवयवों की निश्चित संरचना होती है। इन अवयवों में अन्य दूसरे प्रकार के पदार्थ जब मिल जाते हैं तब उनकी मौलिक संरचना बदल जाती है, जिसे हम प्रदूषण कहते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य यह है कि पर्यावरण की भौतिक रासायनिक अथवा जैविक गुणवत्ता में प्राकृतिक अथवा

मानवाकृत अवांछित परिर्वतन, इन अवांछित परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी ऐसे ठोस द्रव या गैसीय पदार्थ जो कि ऐसी स्वन्द्रता में विद्यमान रहते हैं जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। वे पर्यावरण प्रदूषण कहे जाते हैं। प्रदूषण हमेशा हानिकारक होता है और इसका अनुभव आसानी से किया जा सकता है। अधिकतर प्रदूषण मानवीय क्रियाओं की देन है, परन्तु कुछ प्राकृतिक क्रियाएं भी प्रदूषण फैलाती हैं। जैसे ज्वालामुखी का फटना, जंगल में लगने वाली आग, भूकम्प, चक्रवात और भू अपरदन कुछ ऐसी प्राकृतिक क्रियांए है जिनसे प्रदूषण होता है लेकिन इन प्राकृतिक कारकों से प्रदूषण का सबसे गंभीर असर मानव स्वास्थ्य और जैव–विविधता पर पड़ता है। अपने दिन भर के क्रिया–कलापों द्वारा जाने, अनजाने हम अनेक वस्तुएं व्यर्थ समझ कर फेंक देते हैं, जिसे कचरा कहा जाता है। घरों से निकला थोड़ा कचरा आज शहर के लिए सरदर्द बना है। डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ और पालीथीन ने कचरे को ज्यादा बढ़ाया है। शहरों में घरेलू कचरे के उचित निबटान की जिम्मेदारी स्थनीय प्रशासन की होती है और प्रशासन इसमें प्रायः असफल रहता है, क्योंकि वह कचरे को किसी निर्धारित स्थान पर फेंककर निश्चिन्त हो जाना चाहता है। अवैज्ञानिक तरीकों से कचरे के प्रबन्धन ने जन स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा किया है। वर्षा के समय कचरा बहकर नदियों में मिलकर या भूमिगत जल तक पहुंच कर प्रदूषण का प्रमुख कारण बना है। कचरे के ढेर में मक्खी, मच्छर, तिलचट्टे, चूहे और दूसरे कीड़े मकोड़े अपना कुनवा खूब बढ़ाते है और तमाम रोगों का कारण बनते हैं। बरसात शुरु होते ही डायरिया का प्रकोप मुख्यतया दूषित जल के कारण ही होता है। तेजी से बढ़ती आबादी एवं बीमारियों के कारण नर्सिंग होम एवं अस्पताल की संख्या में दिनो दिन बढ़ोत्तरी हो रही है। इनके द्वारा खतरनाक जैव–चिकित्सकीय कचरे का समुचित निस्तारण न होने के कारण विभिन्न बीमारियों जैसे वायरल, हैपिटाइटिस,टी.बी., अन्त्रशोध, ब्राकाइटिस, त्वचा व आंखों के रोगों के साथ–साथ पर्यावरण के लिए खतरे भी बढ़े है।

अस्पताल में भर्ती किए गये रोगी से औसतन 2 किग्रा0 कचरा निकलता है। जिसका लगभग 50 प्रतिशत भाग संक्रमित होता है। इस सम्बन्ध में एक जनहित याचिका के दौरान माननीय उच्च न्यायालय ने केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड को निर्देश जारी किए है। कचरे से क्रोमियम अलग करने की तकनीक विकसित होने के बाद भी शायद कहीं कचरे से क्रोमियम अलग किया जाता हो। कई कचरे तो ऊर्जा के बेहतर स्रोत है परन्तु यह सब अनुसंधान की बातें बन कर रह गयी है। सबसे जटिल परिस्थति प्लास्टिक व पालीथिन के अन्धाधुन्ध प्रयोग ने उत्पन्न की है। नालियों में पानी का रुकना और सीवर लाइनों के चोक होने का मुख्य कारण पालीथिन का कचरा ही है। पर्यावरण का सन्तुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक का जागरुक होना आवश्यक है। यूं तो जलपदूषण, वायुपद्रषण का बढ़ता खतरा एक लम्बें अरसे से संज्ञान में है। परन्तु प्रकाश प्रदूषण की अवधारणा भारत के लिए नइ ही है। इसका मुख्य कारण गलत डिजाइन वालें प्रकाश स्रोत है।

विहँसो ज्योतिर्मयि

बुद्धिसेन शर्मा

विहँसों ज्योतिर्मयि! अवनी का कण–कण ज्योतिर्मयी हो,
तृण–तृण के स्वर–स्वर से जागृति का सुहाग अक्षय हो;
गहन तमिस्रांचल में भी तव पुण्य प्रभा से पुलकित
सत्यं–शिवं–सुंदरं जन–जन का मन मंगलमय हो।

दीपमालिके, शून्य गगन से वसुधांचल पर उतरो,
प्रासादों से जीर्ण–शीर्ण–जर्जर कुटिया तक विहरो;
अखिल विश्व के पाप–ताप–अभिशाप स्वयं खो जायें,
अंधियारे जग के तुमको छूकर कंचन हो जायें।

लेखक / लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठ्य अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाऐं भेजें।
2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखका का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।
3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।
4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे।हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

डाइटीशियन बनिए

हमारे जीवन में मिलने वाली सफलता, हमारा दृष्टिकोण आदि बहुत कुछ हमारे रहन–सहन के तरीकों व खान–पान की आदतों पर निर्भर करता है। पिछले कुछ वर्षो में स्वास्थ्य व चिकित्सा के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों के चलते लोंगों में आहार व पोषण के प्रति जागरुकता बढ़ी है। आज व्यक्ति स्वस्थ दिखना चाहता है और अपने जीवन व आहार दोनों का संतुलित उपयोग करना चाहता है। इसका प्रमाण दिन–प्रतिदिन बढ़ती हेल्थ क्लबों व अस्पतालों में डाइटीशियन की नियुक्ति। एक ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइस की प्रमुख डायीटीशियन रेखा शर्मा का कहना है कि–समय बदलने के साथ–साथ आपकी आवश्यकताएं भी बदलती हैं। इसलिए आपको उसे समझते हुए उचित आहार लेना चाहिए। परंतु हम यह कैसे निधारित करें कि जो भोजन हम ले रहे हैं वह संतुलित अथवा पोषित है या नहीं? आप क्या खा रहे है, आपकी आवश्यकताएं क्या हैं, आपको उचित पोषण मिल रहा है अथवा नहीं, आपका भोजन कितना संतुलित है आदि ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर देना ही डाइटीशियन का कार्य होता है।

कार्यक्षेत्र

किसी भी डाइटीशियन की सर्वाधिक आवश्यकता होती है अस्पतालों में। कोई भी डाइटीशियन रोगी की बीमारी के विस्तृत अध्ययन के पश्चात्, उसके शरीर की कमी व आवश्यकताओं के अनुसार उसका आहार निर्धारित करता है। साथ ही वह डॉक्टर की सलाह के अनुसार रोगी के लिए पोषक आहार की सारणी भी तैयार करते है।

अस्पताल के अतिरिक्त डाइटीशियन की नियुक्ति औषधि विज्ञान संबंधी कंपनियों, आहार वस्तुओं संबंधी कंपनी, शोध संस्थानों, विद्यालयों, औद्योगिक संस्थाओं, होटलों आदि में भी की जाती है। साथ ही हाल ही में तेजी से बढ़ते चिकित्सा केंद्रो व फिटनेस सेंटरों आदि के प्रचलन ने इस क्षेत्र में व्यवसाय के अवसरों को बढ़ा दिया है। सभी चिकित्सा केंद्र बड़ी संख्या में अपने यहां डाइटीशियन की नियुक्ति करते हैं। इससे न केवल वर्तमान में बल्कि भविष्य में भी इस क्षेत्र में रोजगार सुनिश्चित हो गया है। यहां इनका कार्य प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुरुप उनके लिए पोषण व संतुलित आहार निधारित करना है। वह प्रत्येक व्यक्ति की विषय में जानकारी प्राप्त कर उसके अनुरुप आहार सारणी तैयार करते हैं।

प्रशिक्षण

किसी भी डाटटीशियन का प्रमुख कार्य होता है–संतुलित आहार निधरित करना व भोजन के सभी तत्वों को समझना। साथ ही आप को यह भी पता होना चाहिए की प्रत्येक तत्व का क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार यह हमारे शरीर को किस रुप में प्रभावित करेंगें आदि। इसके लिए यह आवश्यक है कि आप पहले इस क्षेत्र में समुचित ज्ञान प्राप्त करें। डाइटिक्स व न्यूट्रिशन के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए आपको स्नातक स्तर में माइक्रोबायोलॉजी, रसायन, भौतिकी, न्यूट्रिशियन और फिजियोलॉजी आदि विषय पढ़ाए जाते है। इस क्षेत्र में बढ़ती हुई रुचि के कारण कई संस्थान व विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी करा रहे हैं। साथ ही देश के कई प्रमुख विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर स्तर में इस क्षेत्र में विशेषता भी प्रदान करते हैं। परंतु यदि आप स्नातक स्तर पर ही इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते है तो विज्ञान वर्ग से 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् दिल्ली, मुंबई, चेन्नई व पांडिचेरी विश्वविद्यालय से न्यूट्रीशन अथवा न्यूट्रीशन और स्वास्थ्य जैसे विषयों के साथ स्नातक कर सकते हैं। इस क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले यह आवश्यक है कि आपकी इस विषय में रुचि हो तथा आपकों दवाइयों के विषय में आधारभूत ज्ञान हो। साथ ही आप में विज्ञान के प्रति रुझान, प्रतिनिधित्व करने की क्षमता, धैर्य, सभी प्रकार के व सभी आयु वर्ग के लोगों से मिलने व बात करने की कला का ज्ञान होना आवश्यक है।

कुछ संस्थान

1.एसनसनडीटी वूमन यूनिवर्सिटी, मुंबई 2. निर्मला निकेतन, मुंबई 3.इंस्टीटयूट ऑफ होम इकोनॉमिक्स, दिल्ली 4.मुबई विश्वविद्यालय, एमजी रोड, फोर्ट, मुंबई 5.दिल्ली विश्वविद्यालय

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी "नैना"
एम.ए., एम0सी0ए0,
प्रकाशित रचनाएं– विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में लेख, कविताएं प्रकाशित। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव
सचिव :जी.पी.एफ.सोसायटी, **प्रातीय महासचिव** : राष्ट्रीय जनचेतना, उ0प्र0
प्रकाशनाधीन : लघु उपन्यास 'रोड इन्सपेक्टर एवं उपन्यास 'दिल का पैगाम', कविताएं ' यमुनापार के कवि
सम्पर्क सूत्रः एल.आई.जी. 93, नीम सराय, धूमनगंज, इलाहाबाद एवं एम–टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, कौशाम्बी रोड, राजरुपपुर, इलाहाबाद
बातचीतः552444 सायं 3 से 7 बजे तक।

छठवी किस्त

पिछले अंक में आपने पढ़ा–

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल को दोस्ती साथ पढ़ने वाली,लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरिया याद बन जाती है।

0 अनिल व सावन अनु के घर का पता ढूढने डा0 रेखा के घर जाते है। वहाँ सावन की मुलाकात मोना से होती है और वे एक दूसरे को दिल दे बैठते है।

0 मोना के चले जाने के बाद सावन ही हालात खराब हो जाती है। इससे डा0 रेखा और अनिल परेशान हो जाते है।

0 सावन अनू के घर पहुँचता है आगे मिलने की योजना बनाता है

और अब आगे......................

रात्रि में सावन अपने कमरे पर लेटा है। उसके दिमाग में इस समय सिर्फ मोना ही मोना नाच रही है। उसे अपने कमरे की प्रत्येक तस्वीर में सिर्फ मोना ही नजर आती है। वह बत्ती बुझा देता है।

शाम होते ही बत्ती बुझा देता हूँ,
दिल ही काफी है तेरी याद में जलने के लिए।

उससे नींद कोसों दूर थी। वह पूरी रात सिर्फ मोना ख्वाब में सोचता है–"मोना के बिना मेरा क्या होगा? कैसे जिउगा? चाहे कुछ भी हो जाए, वह मोना प्राप्त करेगा। इसके लिए अगर उसे जान की बाजी भी लगानी पड़ेगी तो वह लगायेगा। उस जीने से क्या फायदा जब इंसान अपनी पंसद का ही दमन कर दे।" उसे अचानक एक शेर याद आता है–

कदम चूम लेती है, खुद आकर मंजिल,
मुशाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे।

उसे यह शायरी आत्मबल प्रदान करती है। वह सोचते–सोचते सो जाता है। जब नींद खुलती है तो दिन के 12 बज चुके होते है। दिन भर इधर–उधर अपने को बहलाए रहता है। जो दूसरों की समस्याओं को हल करने का सम्राट था, आज वह खुद फॅस गया। दूसरे दिन सुबह अनिल आता है और सावन को जगाता है।

"अबे घोंचू! इतना मत सोच, नहीं तो जानता है–ये इश्क बड़ा है सख्त–सख्त, इसका न कोई इलाज ये रागे बड़ा है लाजवाब, न हो तू इसका मरीज, वरना हो जायेगा तू भी वेकार" (वह सावन के द्वारा पूर्व में कही गये शेर को दोहराता है।)सावन बोलता है–

"अबे गदहे, छोड़ो भी। बोलो अपनी बुआ के घर कब चल रहे हो?"

"पहले फ्रेश तो हो ले और फिर मेरे घर चल। वहीं नाश्ता होगा और फिर आज ही चलेंगे।"

सावन अतिशीघ्र ही तैयार हो जाता है और अनिल के कहे अनुसार ही कपड़े पहनता है। अनिल ने उसे तैयार देखकर कहता है–"हॉ, अब तू हरियाली वाला सावन

0 सावन और मोना दो दिन साथ रहने के बावजूद अपने दिल की बात बयॉ नहीं कर पाते

0 सावन तुम्हें मेरी दोस्ती की कसम, तुम सच–सच बताओं तुम्हें हुआ क्या है। क्या मैं तुम्हारा दोस्त नहीं।

0 तुम पर अपने लगाने वाली एक से बढ़कर एक लड़किया मरती थी, लेकिन तुम्हें रिझा नहीं सकी। लेकिन क्या बात है मोना में जो तुम दो दिन में ही इतना डूब गये।

0 भइया, आप तो मेरी जान है। द्वापर में श्रीकृष्ण भगवान ने द्रौपदी की समय–समय पर रक्षा की। अपनी बहन सुभद्रा का अपहरण करवाया। लेकिन आप तो उनसे भी बढ़कर है।

दिख रहा है।"
सावन अनिल के साथ उसके घर पहुँचता है। वहॉ सावन की मुलाकात अनिल की भाभी से होती है। (सावन को देखकर)–
"भई, क्या बात है? आज हमारे प्यारे–प्यारे शायरी वाले देवरजी मेरे मन को डगमगा रहे हैं। कहीं मेरा मन विचलित न हो जाये। (सिसियाते हुए) ये प्यारी–प्यारी सूरत, ये गोरा, मासूम सा चेहरा, इस फबकते ड्रेस पर लड़किया तो क्या हम बूढ़ी औरतें भी मर–मिटने को तैयार हो जायेंगी। आज कहीं कुछ उल्टा–सीधा करने की तैयारी हुई है क्या?"
"भाभीजी, इस बन्दे की नजर, आप पर या किसी अन्य पर तो नहीं बल्कि आपकी प्यारी–प्यारी बहना के दिल पर डाका डालने की है।"
"हाय राम, ये बात है।"
उसी वक्त अनिल के भईया के आ जाने के कारण वह ऊपर चली जाती है। सावन और अनिल नाश्ता करते हैं और न्यूकालोनी के लिए चल देते हैं। अनिल की बुआ के घर पहुँचने पर अनिल और सावन को देखकर बबली बहुत खुश होती है।
"हाय, सावन भइया। आज तो आप बहुत ही प्यारे लग रहे है। एकदम मोना की पंसन्द की ड्रेस पहने है। वैसे ये बताइए कि आपने कैसे उसकी पसंद मालुम कर ली।
(सावन कुछ नहीं बोलता है सिर्फ अनिल की तरफ देख कर मुस्कराता है) यानी, यानी कि आपके दिल पर भी डाका पड़ ही गया। और इसका मतलब ये हुआ कि मोना अब भाभी बन जाएगी। मुझे तो अब अपने डॉस की प्रेक्टिस शुरु कर देनी चाहिए।"
अनिल अपनी बुआ से मिलने अंदर चला जाता है। सावन और बबली बाहर लॉन में ही बैठ जाते है।
"भइया, मोना ने जबसे आपको देखा है पता नहीं क्यों, वह पूरी तरह से बदल चुकी है। वह बहुत ही सिद्धातवादी लड़की थी। जैसे आप अपने पास लड़कियों को फटकने नहीं देते, उसी तरह वो भी लड़कों को अपने पास फटकने नहीं देती। आप पहले लड़के हो जिससे वह इतना अधिक प्रभावित हुई है और अब मर रही है। वह मेरे पा प्रतिदिन आती है और आपके गुण, रुप, शायरी, चुटकुलों अंदाज आदि के बारे में घंटो बातें किया करती है। वह हमेशा पूछती है कि आप कब आयेंगें? वह आपके दर्शन को भगवान का दर्शन मानती है। वह बार–बार कहती है–'मेरा सपनों का राजकुमार, मेरा भगवान, मेरा देवता सिर्फ सान ही है और सिर्फ सावन को ही प्राप्त करना चाहती हुँ। अगर वो आकर कहें तो मैं अपनी जान भी दे सकती हूँ।"
"अच्छा बबली, यह बताओं कि वो रहती कहॉ है? और कब मिल सकती है।"
"वह रजनीशपुरम् में रहती है। उसके माता–पिता उससे बहुत ही प्यार करते है।"
खुदा का शुक्र कहिए या करिश्मा, मोना अपनी मम्मी के साथ वहीं आ जाती है। पर सावन और मोना बस ऑखें ही दो चार कर पाते है।

नजर ही नजर में मुलाकात हो गयी
रहे दोनों खामोश पर बात हो गयी।

"सॉरी भइया, बुरा मत मानिएगा। मैं शाम तक लौटूगी। ऑटी की बात है, माननीी ही पड़ेगी, काम आएगी। मैं रास्ते में मोना से बाते करुँगी और आपका खत उसको दे दूँगी।"
सावन को उनका इस तरह से आना और जाना बहुत ही बुरा लगा। लेकिन एक झलक मात्र से ही दिल को कुछ तो संतुष्टि मिल ही गयी।
....
बबली रास्तें में मोना को सारी बातें बताती है। साथ में सावन का खत भी मोना को देती है।
"बबली, तुम कितनी प्यारी हो और तुम कितनी खुशनसीब हो जो तुम्हारे हाथों की चाय उन्होंने पी, उनके हाथों से तुमने खत प्राप्त किया और उनकी प्यारी–प्यारी बातों को सुनने का सुनहरा अवसर भी प्राप्त की। इसी के लिए तो मेरा दिल तड़पता रहा। देखो मेरे दिल को, कितनी जोर से धड़क रहा है और कितना तड़प रहा है। (खत को बार–बार चुमते हुए)☐ये मेरे प्यार के देवता की पहली निशानी है।"
मोना घर पहुँचते ही, सर दर्द का बहाना बनाकर अपने कमरे में चली जाती है और दरवाजे को अन्दर से बंद कर लेती है। उसकी ऑखों में सावन की सूरत और दिल में खत को पढ़ने की व्याकुलता थी। उसे चारों ओर बस सावन ही सावन नजर आ रहा था। वह ख़त को खोलती है और ख़त को खोलते हुए उसके प्रत्येक मोड़ को चूमती है। ख़त को खोलते समय उसके दिल में इतनी खुशी है जैसे उसे कोई बहुत बड़ा खजाना मिल गया हो या किसी निःसन्तान दम्पत्ति को पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई हो।
मोना ख़त खोलकर पढ़ती है, जिसमें लिखा है–
"माई स्वीट हर्ट,

गुलाब की खुशबू, मोना
मेरा प्यार तुम्हारे लिए।

कुशल हूँ; कुशल चाहता हूँ,

प्रो0 एम.एन.अकेला ☎:413926
Smart Tailor
SPECIALIST IN SUIT & SAFARI
(सुट एवं सफारी के विशेषज्ञ)
पता : 50, कोठापार्चा, डॉट के पुल के बगल में, इलाहाबाद–3

बस तुमसे मिलन चाहता हूँ।
ये नर्म–नर्म हवा, झिलमिला रहे है चिराग, तेरे ख्याल की खुशबू में बस रहा है दिमाग।
नींदो का सिलसिला, मेरी ऑखों से दूर है, हर रात रत जगा है, तुझे देखने के बाद।
हम तो समझ रहे थे, मिलेगा सुकूने दिल, दर्द और बढ़ गया तुझे देखने के बाद।
जिन्गी के मरहले आसान होते जायेंगें, अगर आप इस दिल के मेहमान होते जायेंगे।
जीत लूँगा मैं जहाने बेवफा को एक दिन, राह के पत्थर अगर इंसान होते जायेंगे।
मै तुम्हारी क्या तारीफ करुँ,
अल्फाज नहीं मिलते।
परियों को भी ऐसा, हुश्न कहॉ मिलता है।
मैं बहुत छोटा खत लिख रहा हूँ शायरी में,
शायद तुझे शायरी प्रिय है इसलिए लिख रहा हूँ।
और क्या लिखूं मेरी प्रिय किताब हो तुम, मेरे आज तक के इन्तज़ार का परिणाम हो तुम।
मैं तुम्हारा मीत हूँ, मनुहार करता हूँ,
मैं तुम्हारा हुँ, तुम्हें प्यार करता हुँ।
गुड डे टू माइन, गुड से टू गॉड
गुड नाइट टू मोना, सावन का तुझे सलाम।
तुम्हारा हमराज
मोना का सावन
मोना खत पढ़ते–पढ़ते ख्वाबों में खो जाती है–"वाह, क्या शायरियॉ है, बस शायरियों में ही पूरी बातें कह दी गयी है। वाक्यों की जरुरत ही नहीं है। वाह, भगवान ने क्या दिमाग दिया है। यह सावन रुपी देवता मुझे स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा।(वह शादी के बारे में सोचने लगती है।) उसकी शादी सावन से हो रही है, सभी उसकी पसंद पर नाज कर रहे है। दोनों हनीमून पर जाते है।........"
इसी बीच मोना की मम्मी उसके लिए दूध ा और ब्रेड लेकर आती हैं। और मोना से कहती है–"मोना, बेटा, ये खाकर दूध पी लो"
मोना को इस हॅसीन स्वप्न के बीच में अपनी मम्मी का आना बहुत ही खलता है। वह अपना सारा गुस्सा दूध और ब्रेड पर निकालती है। वह उसे नोंच–नोंच कर फेंक देती है। कहा गया है कि हॅसीन सपने बहुत ही कम आते है, उन्हें लाया नहीं जा सकता। जब दुबारा सपने लाने के सारे प्रयास विफल हो गये तो वह पत्र लिखने बैठ जाती है।
"मेरे जीवन के सूरज,
मेर सपनों के राजकुमार,
प्रिय सावन
आपके ख़त ने हमारे दिल के ख्वाबों को हकीकत में बदल दिया है। मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि आप मेरे दिल के इतने करीब हो, ये ख़त आपने लिखा है। जब से आपको देखी हूँ, मैं अपने आप को ही भूल गयी हुं। अगर आप कल न दिखते, यह ख़त न मिलता तो मैं जीतेजी मर जाती। कहिए भगवान का शुक्र जो आपके दुर्लभ दर्शन हो गये।
सावन, यह पूर्णतया सच है कि मैंने आपको पहली बार देखा तो मेरे दिल की धड़कन बढ़ गयी। मैं पहली नजर में आपको सबकुछ मान बैठी। मैं जैसे जीवन–साथी की कल्पना करती थी, उससे भी बढ़कर आपको पाया है। लोग उदाहरण देते हैं –'एक कुँआरी के ख्वाबों का पति कभी नहीं मिलता।' मगर मेरा स्वप्न सच्चाई की ओर अग्रसर है। मुझे इंसान के रुप में सावन रुपी भगवान मिल गया है। मैं तो भगवान से मात्र इतनी ही प्रार्थना करुँगी कि मुझसे सब कुछ छीन ले, मगर मेरे सावन मुझे दे दे और वह हमेशा–हमेशा के लिए आपको मेरी नजरों के सामने कर दे ताकि आपका प्यार चेहरा हर वक्त उठते–बैठते, सोते–जागते, घूमते हर तरफ नजर आये। मैं जिधर भी देखूँ बस आप ही आप दिखायी पड़े।
सावन आपसे मिलने के लिए, आपकी प्यारी–प्यारी बातें सुनने के लिए, शायरियॉ सुनने के लिए, आपको हाथों, अधरों को चूमने के लिए मेरा जी मचलता है। मेरे दिल की हालत काश आप समझते तो अभी दौड़े चले आते। सावन, प्यारे सावन आपको मेरे दिल का, दिल को लिखा हुआ पैगाम मुबारक हो।
दिल चाहता है मिलने को, मुख देखने को नैन,
श्रवण चाहता है सुनने को; प्रिय आपकी फैन।।
कबूतर जा;जा;जा, पहले प्यार की पहली चिट्ठी सावन को दे आ।
मेरे हमसफर; हमनजर; हमदम; हमनमा; हमराही; हमजिगर; तू है कहॉ?
मेरे दिल की धड़कन, मेरे फूल, मेरी आवाज मेरी जान तूझे पुकार रही है।
आपकी और सिर्फ आपके प्यार की पहेली मोना
अनिल मोना का खत लाकर सावन को देता है और कहता है–
"सावन, यह तुम्हारे पापाजी का ख़त है। उन्होंने तुम्हें तुरंत गॉव बुलाया है।"
सावन सन्न रह जाता है कि आखिर बात क्या है? कहीं शादी–वादी का चक्कर तो नहीं या कहीं किसी की तबियत तो खराब नहीं हो गयी है। अनिल पुनः बोलता है "सॉरी यार, यह तो तुम्हारे दिल का पैगाम है। जिसे मैं लेकर आया हूँ।"
सावन ख़त पढने लगता है।
शेष अगले अंक में ....

बदला लेने का एक बेहतरीन तरीका खामोशी है। दाऊ जी
खामोशी अक्लमंदी की निशानी है।

छली गयी बबली

बेचारी बबली को भयानक संघर्ष की आग में झोंक देने वाला कोई और नहीं, बल्कि स्वयं उसका पति परमेश्वर रमेश निकला।

कभी खुद को भाग्यशाली समझने वाली बबली बहुत अभागी निकली। इस भरी दुनिया में उसका कोई मददगार नहीं रह गया। पहले पिता गुजरे, फिर पति भी चल बसे। ऐसे में उसकी विधवा मां ने उसका दूसरा ब्याह यह सोचकर दिल्ली के एक युवक से किया कि उसका भविष्य सुधर जाएगा, लेकिन वह अव्वल दर्जे का धोखबाज और दगाबाज निकला। वह शादीशुदा होने के साथ दो बच्चों का बाप था। उसने धोखा देकर ब्याह रचाया। ससुराल जाने पर असलियत का खुलासा हुआ तो बबली ने माथा पीट लिया। फिर भी उसके साथ जीवन निभाने का मन बनाया, पर उसने उसका जीना दुश्वार कर दिया। दबाव बनाने लगा कि वह अपनी मां से एक लाख रुपये नकद मांगकर लाये। उसके इनकार करने पर वह उसे दिल्ली से लाकर इलाहाबाद स्टेशन पर छोड़ गया।

बबली इलाहाबाद शहर के करेली थानान्तर्गत शास्त्री नगर की है। उसके पिता गंगाप्रसाद का कुछ साल पहले निधन हो गया था। बबली की शादी हुई और वह बच्ची की मां बनी पर पिछले साल उसके पति की भी गुर्दे में खराबी आ जाने के कारण मृत्यु हो गयी। वह अपनी दुधमुंही बच्ची के साथ पहाड़ जैसे जिदंगी कैसे बसर करेगी, यह चिंता उसकी विधवा मां को खाये जा रही थी। उन्होंनें बबली का दूसरा विवाह करने का इरादा बनाया और अखबारों में इश्तहार छपवाया। इस पर कई रिश्ते आये, जिसमें दिल्ली का एक रिश्ता जंच गया। बबली से शादी को इच्छुक रमेश नामक इस युवक ने पत्र भेजकर जानकारी दी कि वह सिक्योरिटी सर्विस चलाता है और उसकी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। उसने यह भी जानकारी दी थी कि वह दो बच्चों का पिता है। रमेश ने पत्र में अपना पता नई दिल्ली का लिखा था। बबली की मां ने इस पते पर रमेश से सम्पर्क साधा। बातचीत का सिलसिला बढ़ा और सगाई हो गयी। बबली के मुताबिक उसकी मां ने उसका विवाह पिछले साल 26 अगस्त को आर्य समाज मंदिर चौक में रमेश से कर दिया। वह ढेर सारे सपने संजोये रमेश की दुल्हन बनकर दिल्ली पहुँच गयी। कुछ दिन खुशी के बीते, मगर एक दिन उसकी सारी खुशियॉं, सारे सपने एक ही झटके में उस वक्त खाक हो गये, जब पड़ोस की एक महिला ने उसे यह जानकारी दी कि रमेश की पत्नी मरी नहीं, बल्कि जिंदा है। यह भी खुलासा हुआ कि वह किसी सिक्योरिटी सर्विस का मालिक नहीं है। बली सन्न रह गयी। रमेश के आने पर उसने असलियत जाननी चाही तो उसने गालियां बकने के साथ उसकी पिटायी कर दी। उसकी दो बरस की बेटी श्वेता को भी बुरी तरह पीट डाला। बबली करती भी तो क्या? यह सोचकर चुप हो गयी कि तकदीर में जो लिखा होगा, देखा जाएगा। किसी तरह कुछ और दिन गुजरे। इसके बाद एक दिन रमेश ने उससे कहा कि वह श्वेता को साथ नहीं रख सकता। यदि वह उसके साथ जिंदगी बसर करना चाहती है तो श्वेता को उसे अपने मां के पास छोड़ना होगा। ऐसा कर पान किसी भी मां के लिए मुश्किल होता है, लेकिन बबली ने कलेजे पर पत्थर रखकर यह भी किया। अपनी मासूम बिटिया को इलाहाबाद ले जाकर मां के पास छोड़ आयी। यह सब करने के बावजूद रमेंश शांत नहीं हुआ। इस साल के फरवरी माह की 22 तारिख को उसे फिर बल भर पीटा और धमकाया कि वह अपनी खैरियत चाहती है तो अपनी मां से एक लाख रुपये लेकर आये। धमकी दी ऐसा न करने पर वह उसे मारकर, उसकी लाश को गटर में फेंक देगा। उसी दौरान रमेश की बहन कल्पना वहां पहुँच गयी। वह भी कहने लगी–'इसे घर से निकाल दो, एक लाख रुपये लाये तभी रहने दो।' इस पर बबली ने रमेश से कहा कि वह उसके साथ इलाहाबाद चले, वहीं मां से पैसे की बात हो जाएगी। रमेश राजी हो गया। दोनों 25 फरवरी को ट्रेन द्वारा इलाहाबाद आये, लेकिन रमेश स्टेशन से ही नदारद हो गया। पूरा स्टेशन बबली ने छान मारा, पर रमेश कहीं नहीं मिला। बबली ने सोचा कि हो सकता है, रमेश सीधे उसके घर पहुंच गया हो। बबली घर पहुंची, पर वह वहां भी नहीं था। उसने अपनी मां से पूरा वाकया कह सुनाया। सब जान–सुनकर उसकी मां सन्न रह गयी थी। रमेश उसके दिल्ली वाले पर सम्पर्क साधा गया, पर अब वह कुछ भी सुनने को राजी नहीं था। थक हारकर बबली ने मई माह में एस.एस.पी. इलाहाबाद से मिलकर अपनी व्यथा–कथा सुनायी। उनके निर्देश पर करैली थाने में रमेश और उसकी बहन कल्पना के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज हो गयी। चूंकि मामला नई दिल्ली का था, सो करैली पुलिस ने मुकदमा दिल्ली पुलिस को ट्रांसफर कर दिया। मगर दिल्ली पुलिस ने मुकदमें को वापस इलाहाबाद भेज दिया कि इसकी छानबीन और कार्यवाही इलाहाबाद पुलिस को ही करनी चाहिए। ये पंक्तियां लिखे जाने तक करेली थाने की पुलिस ने अपने यहाँ मुकदमा दर्ज करके छानबीन शुरू कर दी थी।

विलक्षण प्रतिभा के धनी–शिव बहादुर पाण्डेय

मो0 ताज़ीम / रामचन्दर केशरवानी

धूल–धूसरित चेहरा और अस्त–व्यस्त बदबूदार कपड़ो में सिमटी ये काया अब से दो दशक पूर्व पैरेनियल कैलेन्डर कम्प्यूटर इजाद कर चुका है, जिसके जरिए एक से लेकर अनन्त वर्षो तक की किसी तिथि व दिन को ज्ञान किया जा सकता है। आज के वैज्ञानिक युग में भी यह विलक्षण प्रतिभा एरिया कम्प्यूटर की थसिस लिए भटक रहा है। ये प्रतिभा अपनी थीसिस लिए शासन प्रशासन के बड़े–बड़े ओहदों दारों से मिला किन्तु उसको चन्द आश्वासनों के अलावा और कुछ नहीं मिला।

यह हकीकत जनपद कौशाम्बी के तहसील चायल के अन्तर्गत चरवा (हड़हाई) निवासी 40 वर्षीय शिवबहादुर पाण्डेय की है। वक्त के थपेड़ों ने आज उसकी ये हालत कर दी है कि लोग उसे पागल, मवाली कहने से भी गुरेज नहीं करते हैं। अपने स्वयं के जीविका के लिए से क्षेत्र के छोटे–छोटे प्राईवेट स्कूलों में पढ़ाने के लिए नौकरी ढूढनी पड़ रही है। जहाँ उसे पॉच–छः सौ रुपये प्रतिमाह की नौकरी करनी पड़ रही है। अब तो इस स्कूल से उस स्कूल भटकना शिवबहादुर का शोगल बन गया है। शिव बहादुर पाण्डेय बेहद निर्धन परिवार में जन्में, हाईस्कूल की परीक्षा में 75 प्रतिशत, इंटर की परीक्षा में 66.6 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.एस. सी. करने के इरादे से आये इस युवक की प्रतिभा उस समय उजागर हुई जब इसने वर्ष 1978 में पेरेनियल कैलेन्डर कम्प्यूटर का निर्माण किया। एक दिन हाईस्कूल की अपनी जन्म तिथि देखकर उसकी तारिख जाने की अभिलाषा ने उसे बाजार से कुछ विद्युत उपकरण खरीद कर तारिख निकालने के यंत्र बनाने में जुटा दिया। और उसकी मेहनत रंग लायी कुछ ही दिनों में उसने एक ऐसा कम्प्यूटर बनाने में सफलता प्राप्त कर ली, जिसके जरिये एक से लेकर अनन्त वर्षो तक ही तिथि व दिन को ज्ञात किया जा सकता है।

अपनी इस उपलब्धि से हर्षित शिव सबसे पहले जनपद के तत्कालिन जिलाधिकारी भूरेलाल के पास गया। जहाँ उन्होंने उसकी सराहना करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति के पास भेजा। विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के विभागध्यक्ष और एम.एल. एन.आर. कालेज के निदेशक ने प्रमाण पत्र उपलब्ध करा आगे बढ़ने के साथ ही आर्थिक सहायता भी उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। शिव के अनुसार इस उपलब्धि की चर्चा होने पर कुछ वैज्ञानिकों ने कुछ पैसे लेकर थीसिस देने को कहा। लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी से भी शिव ने मुलाकात की। उन्होंने उसे पच्चास हजार रुपये नगद पुरस्कार वव 1000 रुपये मासिक सहायता कराने का आश्वासन भी दिया। किन्तु दो दशक की लम्बी अवधि के बावजूद उसे इस तरह की कोई सहायता नहीं मिली।

शिवबहादुर के पास पैरोनियल कम्प्यॅटूर के अलावा ऐरिया कम्प्यूटर की थीसिस भी तैयार है, जिसके जरियो सैकड़ो एकड़ भूमि की पैमाइश बैठे–बैठे सेकेन्डो में की जा सकती है। अपनी इस थीसिस के संबंध में जानकारी देते हुए शिव ने बताया कि इस कम्प्यूटर के जरिये विजुअल प्वाइंट, यानि इन्सान जितनी दूरी की की भूमि को अपने आँखों से देख सकता है, उतनी भूमि का क्षेत्रफल कम्प्यूटर बैठे–बैठे बता देता है। शिव का कहना है कि यदि सरकार उसे सहायता प्रदान करे तो वह इस कम्प्यूटर का निर्माण कर सकता है। जोकि भूमि पैमाइश के मामले में लेखपालों और अन्य अधिकारियों के लिए काफी सहायक होगा।

यहॉ ये भी उल्लेखनीय है कि शिव द्वारा निर्मित पैरोनियल कैलेन्डर कम्प्यूटर के बारे में वर्ष 1980 में दूरदर्शन व आकाशवाड़ी पर भी जानकारी दी गयी और इस संबंध में शिव की वार्ता भी प्रस्तुत की जा चुकी है। किन्तु इसके बावजूद प्रदेश और न केन्द्र सरकार के नुमाइन्दों का ध्यान इस ओर गया है। शिव के मुताबिक एक बार दिवंगत राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने इन्हें 10,000रुपये प्रतिमाह लेकर सरकार के वैज्ञानिकों के साथ कार्य करने को कहा था, किन्तु शिव ने मना कर दिया था। आज मौजूदा परिस्थितियों में विलक्षण प्रतिभा का धनी शिव भुखमरी के दिन गुजार रहा है, वही शासन प्रशासन और जनिप्रतिनिधियों के आश्वासन के बीच दर–दर भटकने को मजबूर है।

वासना से तड़पति प्रेतिन दुल्हन

दर्देदिल राज

0 यह एक ऐसी अल्हड़ जवान युवती की कहानी है जो सोलह साल की उम्र में टी.वी. की मरीज होने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाती है और प्रेतआत्मा बनकर एक सीधे–साधे नादान लड़के को इश्क के नाम पर बर्बाद करना चाहती है।
0मैं आखिरी सॉस तक अपने पति का इन्तजार करती रही, पर तुमने मेरे पति को अपने काम की वजह से छुट्टी न देकर बहुत गलत किया है सेठ।
0 रमेश, शीबू को अपने गॉव लिवा जाता है और रात में दोनों उसी पलंग पर सोते है जिस पर रमेश और उसकी पत्नी रेशमा ने अपनी पहली रात व्यतीत की थी। दोनों बाते करते–2 को बारह बजे के बाद अचानक रमेश उठता है और शीबू के गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ देता है। शीबू चौक कर उठके बैठ जाता है तभी रमेश दुसरे गाल पर फिर एक थप्पड़ मारता है।

अपनी रचना पढ़ने वाले सभी पाठको हम बताने चाहते है कि शायद इस कहानी को पढ़कर आप का ताज्जुब होगा या फिर आपको विश्वास नहीं पड़ेगा। मगर पाठको ऐसा हुआ है। इस कहानी में कही पर भी कोई गलत और झूठी बाते नहीं है। दरअसल ये एक नादान लड़के के साथ ऐसा हुआ है। मगर मैं उस गॉव का नाम इस कहानी में जाहिर नहीं करना चाहता, ये एक ऐसी अल्हड़ जवान युवती की कहानी है जो सोलह साल की उम्र में टी.वी. की मरीज होने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। मृत्यु को प्राप्त होने के बावजूद भी प्रेतआत्मा बनकर एक सीधे–साधे नादान लड़के से इश्क के नाम पर उसे बर्बाद करना चाहती है।

एक लड़का है शीबू जो दसवी कक्षा में पढ़ने के साथ–साथ पार्टटाइम एक प्रेस में सिलेण्डर मशीर पर काम भी करता है। वहॉ उसकी मुलाकात रमेश चन्द्र पाल से होती है। जिसकी की अभी हाल में नयी–2 शादी हुई है और वह अपने गॉव से वापस लौटा है। उसकी शादी के मात्र छः माह बाद उसकी पत्नी रेशमा का स्वर्गवास हो जाता है। उसकी आत्मा प्रेस के दरवाजे तक आकर दस्तक देती है। दोपहर का समय है शीबू और रमेश चन्द्र पाल दोनों मशीन पर काम कर रहे हैं।

रमेश : शीबू मैं घर जाना चाहता हूॅ यार, मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। लग रहा है जैसेकि मुझपर कोई तुफान आने वाला है। पता नहीं क्यू मुझे बीबी की याद आ रही है।

शीबू: होता है यार, होता है। अभी नयी–2 शादी हुई है। इसलिए तुझे याद आ रही है।

रमेश : तुझकों तो मजाक सुझ रहा है यहॉ मेरी जान जा रही है। अब मैं मशीन बन्द करता हूँ यार और मालिक के पास छुट्टी लेने जा रहा हुं। (रमेश मशीन बन्द करता है ओर प्रेस मालिक के आफिस में जाता है।)

मालिकः कौन हो तुम।

रेशमा : मैं तुम्हारे वर्कर रमेश की बीबी हुं सेठ। मेरा पति तुझसे बार–बार छुट्टी मॉग रहा था पर तुमने छुट्टी नहीं दिया और मेरे प्राण निकल गये सेठ। मैं मौत के आखिरी सॉस पर अपने पति का इन्तजार करती रही, और उसकी सूरत देखने को तड़प गयी पर तुमने मेरे पति को अपने काम की वजह से छुट्टी न देकर बहुत गलत किया है सेठ।

(इतने में मालिक दौड़ते–2 सीधे रमेश के पास आता है तो देखता है रमेश गुमसुम बैठा है और उसकी पलकें ऑसूओं से भींगी हुई है।)

मालिकः रमेश सारा काम छोड़कर तुम फौरन घर चले जाओ। मैं तुम्हें छुट्टी देता हुं। (रमेश जोर से रोने लगता है)

रमेशः सर पता नहीं क्यू मुझे रुलाई आ रही है। लगता है जैसेकि मेरी बीबी इस दुनियॉ में अब नहीं रही।

मालिकः नहीं रमेश, नहीं। ऐसा मत बोलो। ये रास्ते का किराय भाड़ा और कुछ खर्चा पानी रख लो और जल्दी जाओ।

(रमेश अपने घर सुबह–सुबह पहूँचता है तो देखता है उसकी पत्नी रेशमा की लाश घर के बाहर पड़ी हुई है और उसके सारे परिवार वाले मातम मना रहे है। पुरा घर खामोश और वातावरण बिलकुल शान्त है।) तब रमेश को पता चलता है कि उसके ससुराल वालों ने उससे ये बात छुपा रक्खी थी कि उसकी बीबी को टी.वी. की बिमारी है। खैर रमेश अपनी पत्नी का अंन्तिम संस्कार बगैरह करने के कुछ दिनों के बाद प्रेस फिर आता है और अपने काम में लग जाता है, देखते–देखते एक साल बीत जाता है और रमेश के साले राजू की शादी पड़ती है तो रमेश शीबू को भी चलने को जिद्द करता है।

रमेशः शीबू तुझको चलना है या नहीं।

शीबू: कहॉ यार।

रमेशः मैं तुझे कितनी बार याद दिलाऊ कि अगले महीने मेरे साले राजू की शादी पड़ रही है और मेरे साथ तुझकों भी चलना है।

शीबू: पर यार मैं (रमेश बात काटते हुए)

रमेशः देख शीबू पर–पर मैं कुछ भी नहीं जानता यार। हमेशा तो शहर में तू रहता

ही है। चल इस बार तुझको इसी बहाने अपने गॉव भी घूमा लाउ। बड़ा मजा आयेगा यार। वहॉ, बाग–बगीचे, ढेर सारे हरे पेड़ शुद्ध हवा शान्त वातावरण, तालाब वगैरह, यार गॉव का आनन्द ही कुछ और है। बोल चलेगा कि नहीं, वरना ....।

शीबूः अच्छा बाबा चलूगा। बस।

रमशे, शीबू को शादी के पन्द्रह दिन पहले से ही अपने गॉव लिवा ले जाता है और रात में दोनों खाना–पीना खाने के बाद एक ही पलंग पर सोते है और खुब बाते करते हैं। रात नौ बजे से ग्यारह बजे तक गपशप होती रहती है। ये वही कमरा है और वहीं पलंग है, जिस पर रमेश और उसकी पत्नी रेशमा दोनों एक दूसरे के साथ अपनी पहली रात व्यतीत की थी।

रमेशः यार, शीबू आज इस विस्तर पर लेटा तो रेशमा की याद आ गयी, मालुम है शीबू हम बस सिर्फ एक ही बार अपनी बीबी से मिले है, इसी कमरे में और इसी बिस्तर पर उसके बाद अपनी बीबी का चेहरा मरने के बाद देखने को नसीब हुआ। देखों शीबू इस कमरे में अभी तक हमारी शादी की निशानी भी नहीं मिट पायी है।

शीबूः पर यार। छः महीने में एक ही बार मुलाकात हुई।

रमेशः हॉ शीबू। देहातों में ऐसा ही होता है। शादी तो जल्दी, कम उम्र में ही हो जाती है पर गवना रोक देते है।

रमेश शीबू को रेशमा के बारे में एक–2 बाते बता डालता है। यार ऐसा हुआ, वैसा हुआ। हम दोनों ऐसा सोचे थे, वैसा सोचे थे। वगैरह–2। दोनों बाते करते–2 सो जाते है। पर रात को बारह बजे के बाद अचानक रमेश उठता है और शीबू के गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ देता है। शीबू चौक कर उठके बैठ जाता है तभी रमेश दुसरे गाल पर फिर एक थप्पड़ मारता है। शीबू डर सा जाता है। इस गॉव में वो अन्जाना है और उसे यहॉ रमेश के अलावा कोई नहीं जानता है। वहॉ पलंग से उठकर बाहर ऑगन में बैठे–बैठे सारी रात बीता डालता है दूसरे दिन सुबह।

शीबूः रमेश मैं घर जाना चाहता हुं यार।

रमेशः अरे तू। अभी ही तो आया है इतनी जल्दी, क्या बात है। यार जो तेरा मन नहीं लग रहा है।

शीबूः नहीं वो बात नहीं है यार।

रमेशः तो फिर बात क्या है यार। चल तुझको घूमा लाये।

रमेश, शीबू को लेकर चला जाता है और सारा दिन गॉव में घुमाता है। गॉव में घुमने का मजा तो शीबू को खुब आता है। मगर वो बार–बार यही सोचता है कि आखिर रमेश ने उसे कल रात थप्पड़ क्यों मारा था। दूसरे दिन शीबू के साथ फिश्र वहीं हादसा होता है। रात को ठीक उसी समय शीबू के गालों पर फिर थप्पड़ पड़ते है। रमेश के ऊपर सवार उसकी बीबी रेशमा चुड़ैल के रुप में।

रेशमाः तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस बिस्तर पर सोने की। ये मेरा बिस्तर है और मेरे पति के पास सोने का अधिकार सिर्फ मेरा है, सिर्फ मेरा।

शीबूः तुम कौन हों जो मुझको रोज मारती हो।

रेशमाः मैं इसकी बीबी हुं समझे।

खैर किसी तरह से रात बीतती है तीसरे दिन शीबू गॉव से चलने की खातिर जिद्द करता है।

रमेशः आखिर तुझे परेशानी किस बात की है यार।

शीबूः रमेश तू मुझे हर रात को थप्पड़ क्यू मारता है यार। (रमेश जोर से हॅसने लगता है।)

शीबूः रमेश तुझे विश्वास नहीं पड़ रहा है मेरे यार। अगर मैं रुकुगा तो एक शर्त पर मेरे यार, वो ये कि आज के बाद हम दोनों इस कमरे में नहीं सोयेंगे।

रमेशः बस इतनी सी बात। ठीक है। आज हम लोग छत पर सोयेंगे।

तीसरे दिन दोनें छत पर सोते है मगर वही हादसा, ठीक बारह बजे के बाद शीबू के गालों पर थप्पड़ पड़ने लगते है और इस बार शीबू जोर–जोर से रोने लगता है फिर अचानक पता नहीं कैसे रेशमा को तरस आ जाता है और को शीबू को चुप कराने लगती है। शीबू बैठा रो रहा है और उसका दोस्त रमेश ही उसको चुप कराता है। पर देखने में वह रमेश है मगर इस समय उसके पूरे जिस्म में बसी उसकी पत्नी रेशमा है क्योंकि आवाज भी कुछ बदली–बदली सी है।

रेशमाः चुप हो जाओ शीबू। मैं तो यूँ ही इम्तेहान ले रही थी कि तुम डरते हो या नहीं। तुम मेरे पति के दोस्त हो इसलिए मैं उतना ही प्यार करती हुं जितना कि अपने पति को करती हूॅ। (शीबू की हिम्मत बढ़ जाती है और दिल खोलकर रेशमा से बाते करने लगता है।)

शीबूः अगर तुम औरत हो तो मेरे सामने आओ।

मै तुम्हें औरत के रुप में देखना चाहता हुं।

रेशमाः नहीं शीबू। मैं तुमसे प्यार करने लगी हूॅ, इसलिए तुम्हें डराना नहीं चाहती हूॅ। अगर मैं सामने आ जाउगी तो तुम डर कर मर भी सकते हो।

शीबूः मैं नहीं डरुगा। मेरा ये वादा है। मैं तुम्हें हकीकत रुप में देखना चाहता हुं।

रेशमाः नहीं शीबू। मैं तुम्हें अपना असली रुप कभी भी नहीं दिखाऊॅगी। तुम्हें मालुम है शीबू हमारी शादी के मात्र छः महीने ही हुए थे और मैं इस दुनिया से चली गयी, शायद हम दोनों का साथ किस्मत में नहीं लिखा था शीबू। **क्रमशः..........**

दरिद्रता ही नहीं आवश्यकता से अधिक सम्पन्नता भी घातक है

जैनेन्द्र सिहं बघोल

दरिद्रता मानव के लिए अभिशाप ही नहीं वरन पाप भी है। मानव जीवन में जितने भी दुख देखने –सुनने, और अनुभव में आते हैं। इनमें सबसे दारुण दुख दरिद्रता का है। एक शायर ने कहा है कि–

खुदा करे इस दुनियॉ में बदनसीब न हो
और अगर बदनसीब हो तों हम जैसा गरीब ना हो।।

यों तो भारतीय महर्षियों ने सुखों का क्रम इस प्रकार रखा है।

पहला सुख निरोगी काया।
दूजा सुख हो घर में माया।।
तीजा सुख सुलक्षणा नारी।
चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी।।

परन्तु यथार्थ में सपन्नता ही पहला सुख हैं क्योंकि उसके अभाव मं रोगहीन शरीर संभव ही नहीं है, क्योंकि संपन्नता सभी भौतिक सुखों का आधार है और आत्मिक सुखों की सहायक है। इसलिये दरिद्रता जो कि संपन्नता की विपरीत अवस्था है, सभी दुखों की मूल है। दरिद्रता व्यक्ति को शारीरिक दृष्टि से निर्बल, मानसिक रुप से हीन, बौद्धिक दृष्टि से कुण्ठित और नैतिक दृष्टि से प्रायः पतित बनाती है। संसार में ऐसे उदाहरण अपवाद स्वरुप ही मिलते हैं जो कि दरिद्रता से संघर्ष करके हीनता की भावना के शिकार न बनें हों और नैतिक मार्ग से विचलित होकर पतन के निकट या पतन के गर्त में न गिरे हों। दरिद्रता व्यक्ति को साधन संपन्न व्यक्ति का न केवल शारीरिक दास बना देती है, बल्कि मानसिक दास भी बनाती है। क्योंकि वह व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर बना देती है। फलस्वरुप उनका मनोबल टूट जाता है और उनमें सही बात का समर्थन और अनुचित बात का विरोध करने की सामर्थ्य नहीं रहती। महादानी कर्ण, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा जैसे महारथी पेट के कारण दुर्योधन जैसे दुष्टात्मा के साथ जीवन के आखिरी क्षण तक लड़ते रहे। विश्वामित्र ने ठीक ही कहा है कि "विभुविक्षतेः किम् न करोति पापम्"। आज वर्तमान में लोकतंत्र का जो परीक्षण चल रहा है उसने सिद्ध कर दिया है कि "दरिद्रों का लोकतंत्र धनिकों का स्वर्ग है।" साधन हीनता के कारण मनुष्य बहुत कुछ सोचता है लेकिन सक्रियता नहीं बरत पाता, वह निष्क्रिय हो जाता है। यही निष्क्रियता उसे हर क्षेत्र में आगे की सोचने में, अनुसंधान करने में, मान्यताओं का प्रतिपादन करने में बाधा उत्पन्न करती है। जब व्यक्ति में पहल करने की क्षमता मर जाती है तो उसका कर्महीन और बुद्धिहीन होना स्वाभाविक हो जाता हैं।

दरिद्रता एक ऐसी स्थिति है जो व्यक्ति को निराशा की उस सीमा तक पहुँचा देती है कि उसमें जीवित रहने की और कुछ करने की इच्छा ही विलुप्त होने लगती है, और यह स्थिति मनुष्य के जीवन की सबसे भयंकर स्थिति होती है, क्योंकि जिसकी इच्छा शक्ति साथ छोड़ जाये उसका जीवन, नाम का जीवन होता है। दरिद्रता मनुष्य के स्वाभिमान को समाप्त कर देती है और बड़े से बड़े तपस्वियों तथा स्थिति से संघर्ष करने वालों को झुका देती है। महाराणा प्रताप जैसे व्यक्ति को इसी दरिद्रता के कारण अकबर के लिए संधि–पत्र लिखने को मजबूर होना पड़ा था। आज की सबसे विस्फोटक समस्या जनसंख्या बृद्धि की समस्या है। यह समस्या भी दरिद्रता का एक कारण है, आर्थिक साधनों का अभाव ही दरिद्रता है, जिसका कुप्रभाव, मनुष्य के कर्म एवं विचारों पर पड़ता है। कर्मण्यता से दरिद्रता दूर हो सकती है, किन्तु ऐसे अकर्मण्य व्यक्ति जिनके मस्तिष्क में हीनता की भावना अपना चिर स्थान बना लेती है। वे कभी भी उन्नति नहीं कर सकते। 'सकल पदारथ है जग माही, कर्महीन नर पावत नाहीं।' मुंशी प्रेमचन्द्र ने कहा है कि जो व्यक्ति रात दिन भाग्य को कोसते रहते हैं भाग्य भी उनको कोसता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है कि–"दैव–दैव आलसी पुकारा" पहले इच्छा शक्ति हो फिर प्रयत्न हो तो दरिद्रता स्वयं ही समाप्त हो जाती है। संपन्नता मनुष्य को जहां भौतिक सुख प्रदान करती है। वहीं इसकी अधिकता पाप का कारण बन जाती है। संपन्नता व्यक्ति को भ्रष्टता के द्वार पर खड़ा कर देती है। आचार्य विनोबा भावे ने उचित ही कहा है कि "निर्धन और धनवान दोनों ही गिर हुये है, दोनों को ही उठाना आज की समस्या है।" संपन्नता व्यक्ति की नैतिकता का पतन करती है तथा व्यक्ति में सहयोग, सहानुभूति, सौहार्द, दया, प्रेम और बन्धुत्व जैसे मानवीय गुणों का ह्रास करती है, क्योंकि उसमें अहम आ जाता है और उसे छली, कपटी और प्रपंची बना देती है। जो व्यक्ति जितना अधिक संपन्न होगा, उतना ही नैतिक दृष्टि से विपन्न होगा।

आर्थिक दृष्टि से संपन्न आदमी प्रायः नैतिक दृष्टि से बौना होता है। आर्थिक संपन्नता व्यक्ति को आक्रामक तथा राष्ट्र को विस्तारवादी बनाती है। व्यक्ति आक्रामक होगा तो राष्ट्र विस्तारवादी होगा और जब राष्ट्र विस्तार वादी होगा तो वह दूसरे राष्ट्रों को अपनी शक्ति के द्वारा उन पर बलात अपनी इच्छा मनवाने का प्रयत्न करेगा। संपन्नता और दरिद्रता दोनों व्यक्ति के लिए घातक है। इसलिये व्यक्ति के शक्ति मय जीवन के लिए सर्वोत्तम स्थिति वह है कि इतनी दरिद्रता न हो कि व्यक्ति मानव जीवन की ऊँचाइयों तक जाने की बात भी न सोच सके और इतना संपन्न भी न हो कि वह अह्म आलस और लालच आदि विकारों का शिकार होकर मनुष्य ही न रहे। इस संदर्भ में गौतम बुद्ध का सम्यक मार्ग ही श्रेष्ठ है।

समय मूल्यवान है। इसका प्रयोग सोच–समझकर करें। **अज्ञात**

अनुभव के आधार पर ही गल्तियों का सुधार हो सकता है। **अज्ञात**

वैध हिन्दू विवाह की शर्तें

ज्ञानेन्द्र सिंह

हिन्दुओं में विवाह को एक पवित्र एवं धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है, जिसके पति–पत्नी एक अटूट रिश्तें में बंध जाते है। शास्त्रों के अनुसार स्त्री–पुरुष एक दूसरके के बिना अधूरे रहते हैं विवाह के पश्चात पत्नी पुरुष की अर्द्धांगिनी मानी जाती है। स्त्री एवं पुरुष विवाह करके पूर्णता उस स्थिति में प्राप्त कर सकते है, जब विवाह बंधन के समय दोनों मानसिक रुप से स्वस्थ हों। ब्रिटिश काल में न्यायालयों ने एक मामलें में (ए.आइ. आर.1942, इलाहाबाद) यह मत व्यक्त किया था कि प्रत्येक हिन्दू विवाह की सामर्थ्य रखता है, चाहे वह जड़ हो या नपुसक हो या किसी भी आयु का हो, लेकिन एक साधारण से व्यक्ति की समझ में आने वाली बात है कि इस प्रकार के विवाह से क्या फायदा, जो आगे चलकर नासूर बन जाए। क्या ऐसा विवाह सफल हो सकता है? कदापि नहीं, जो रिश्ता जीवन भर के लिए बनाया जाता है, वहां तो जरुरी है कि पति–पत्नी दोनों शारीरिक एवं मानसिक रुप से पूर्ण स्वस्थ हों। हिन्दुओं में विवाह किसी भी विधि के अनुसार हो, कानूनी रुप से वैध होगा। उसकी प्रक्रिया क्या हो, इसके लिए विधिवेत्ताओं ने 1955 में हिन्दू विवाह अधिनियम लागू किया। इस अधिनियम के तहत वही विवाह वैध माना जाएगा, जिसने इस अधिनियम में रखी गई शर्तो की पालना की हो अन्यथा विवाह शून्य माना जाएगा। हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 की धारा 5 के अर्न्तगत उन शर्तो का उल्लेख है, जिनका विवाह के समय पूरा होना आवश्यक है। धारा 5 के अनुसार :

किसी भी पक्षकार की शादी के समय पहले जीवित पति अथवा पत्नी नहीं होनी चाहिए। एक मामले बलविन्दर बनाम गुरुपाल कौर ए. आइ.आर. 1985 दिल्ली में अदालत ने अपना निर्णय दिया कि किसी समाज में संचालित रीति–रिवाजों के अनुसार व्यक्ति न्यायालय की डिक्री के बिना पति या पत्नी को छोड़ देता है और दूसरा विवाह कर लेता है, तो वह विवाह धारा 5 की शर्तो के खिलाफ नहीं होगा।

धारा 5 की शर्तो का उल्लंघन करके यदि कोई व्यक्ति विवाह करता है, तो वह भारतीय दण्ड संहिता की धारा 494 और 495 के उपबंधो के अधीन दण्डनीय अपराध है। पति या पत्नी के जीवनकाल में भारत के बाहर किया गया विवाह भी इस खण्ड के अधीन शून्य है, क्योंकि अधिनियम की धारा 1(2) के अनुसार भारत में अधिवासित हिन्दू, जो विदेश में रहते है, पर भी यह अधिनियम लागू होता है। न्यायालय द्वारा विवाह विच्छेद की डिक्री हो जाने के पश्चात् पूर्व विवाह के पक्षकार (पति या पत्नी) दूसरा विवाह करने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं।

मानसिक क्षमता :

1. विवाह के समय कोई भी पक्षकार (लड़का अथवा लड़की) स्वस्थ मस्तिष्क के होने अर्थात् चित्त विकृति (अनसाउण्डनैस ऑफ माइण्ड) के कारण शादी के लिए सहमति देने में समर्थ न हो, ऐसा नहीं होना चाहिए। 2. विधि मान्य सम्मति देने में समर्थ होने पर इस प्रकार के या इस सीमा तक मानसिक विकार से पीड़ित न रहा हो कि वह विवाह और सन्तानोत्पत्ति के लिए अयोग्य हो। किसी भी पक्षकार को मिरगी का दौरा बार–बार पड़ता हो।

पक्षकारों की आयुः अधिनियम के अनुसार विवाह के समय वर की आयु 21 वर्ष एवं वधू की आयु 18 वर्ष होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस उपखण्ड का उल्लंघन करता है, तो वह धारा 18 के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध है।

प्रतिषिद्ध पीढ़ी की नातेदारीः धारा 5 के उपखण्ड 4 के अनुसार यदि विवाह ऐसे व्यक्तियों के मध्य हुआ है, जो प्रतिषिद्ध पीढ़ी की नातेदारी के अन्तर्गत आते है, तो कानून उस विवाह को मान्यता नहीं देगा, लेकिन यदि दोनों पक्षकारों की रुढ़ि या प्रथा ऐसे विवाह की स्वीकृति दे देती है, तो वह विवाह विधिमान्य होगा। प्रतिषिद्ध पीढ़ी की नातेदारी में मौसी की सन्तान, पिता के चचेरे भाई के वंशज, इसी प्रकार भाईयों के वंशज इसके अन्तर्गत आते है।

सपिण्ड नातेदारीः सपिण्ड नातेदारी के भीतर किया गया विवाह विधिमान्य नहीं होगा, जब तक कि उनकी प्रथा एवं रुढ़ि इजाजत न दे। सपिण्ड नातेदारी से तात्पर्य है कि पितृकुल की पांच पीढ़ी एवं मातृकुल की तीन पीढ़ी तक एक दूसरे से विवाह नहीं कर सकते।

दोहेः सन्दर्भ गुजरात

आज, गाज कैसी गिरी, भ्रष्ट हुआ त्यौहार।
पुंछी अल्पना द्वार की, टूटे बंदनवार।।
हास्य, रुदन में ढल गया, आभा हुई मलीन।
उत्सव की तैयारियां, पल में हुई विलीन।।

ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी'

फर्स्ट सैलरी

नीलम सिंह

वह सैलरी डे था। प्रार्थना की घंटी बजने के कुछेक सैकेण्ड पश्चात पूनम विद्यालय प्रांगण में दाखिल हुई। लाइन लगती देख कुछ आश्वस्त हुई।

"चलो अच्छा हुआ, समय से आ गई।"

सीढ़ियों पर मैनेजर ने उसे टोका, "जरा जल्दी आया कीजिए।"

खिन्न मन से वह वहां से हट गयी। प्रार्थना के बाद रजिस्टर उठाकर वह क्लास में चली गयी। लगभग बीस मिनट पश्चात आया ने सूचना दी, "दीदी, आपको मैनेजर साहब बुला रहे हैं।"

आफिस की ओर जाते हुए पूनम ने महसूस किया उसकी धड़कन बढ़ गयी है। दरवाजे पर वह किसी चीज से टकरा गयी। अपने आपको सम्भाला तो देखा पांच–पांच सौ के दो नोट सामने जमीन पर पड़े है और पाण्डेय जी नोटों को उठाने के लिए झुके हुए हैं।

"ओह...... सॉरी" सकुचाते हुए पूनम ने कहा।

"फर्स्ट सैलरी है न," पाण्डेय जी बोले।

फर्स्ट सैलरी का नाम सुनकर पूनम खिल उठी। मैनेजर ने हस्ताक्षर कराके पांच सौ का एक नोट पूनम की ओर बढ़ाया। पूनम ने झपटकर नोट पकड़ा–मगर ये क्या! "सिर्फ पांच सौ रुपये।" बमुश्किल पूनम के मुंह से निकला।

"हां, कोई आपत्ति है।"

"पाण्डेय जी को तो एक हजार रुपये सैलरी मिली है।"

"योग्यतानुसार ही तो सैलरी मिलेगी सबको"

"इस योग्यता का मानक क्या है? पुरुषत्व?"

"आप कहना क्या चाहती है?"

"मैं भी फर्स्ट क्लास एम.ए. हूं। पाण्डेय जी एम.एस.सी बेशक है, किन्तु मुझमें पाण्डेय जी की सिर्फ 50 प्रतिशत ही योग्यता है–ऐसा मैं नही मानती।"

"देखिए, आपको इससे ज्यादा वेतन नहीं दिया जा सकता। आप आएं या न आएं।"

"मैं औरत हूं, मगर मजबूर नहीं। ऐसी अपमानजनक सर्विस मैं कभी नहीं करुंगी।"

कहकर वा आफिस से बाहर निकल गयी। उसका फर्स्ट सैलरी का उल्लास अब खत्म हो गया था।

दीपमालिके दीप जला

विजयलक्ष्मी 'विभा'

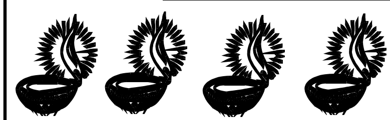

दीपमालिके दीप जला,
फिर आलोक बिछा दे जग में,
जन–जन का कर आज भला।
नीले नभ में सूर्य न दिखता,
हिंसा की यों घिरी घटा,
चाँद सितारे छिप–छिप जाते,
भय से जाता व्योम फटा,
भूपर ऐसा दीप न दिखता,
जो दे मन का कलुष हटा,
शाश्वत तम में पता न चलता,
रात ढली या दिवस ढला।
नभ में बदली भूपर काई,
दोनों का अस्तित्व छिपा,
जगती का कैसा स्वरुप है,
दिखता सब कुछ लिपा–लिपा,
अब प्रकाश भर दे मानस में,
दीपमालिके दिखा कृपा,
सारा तम बिलीन हो जाये,
जिसने अब तक हमें छला।

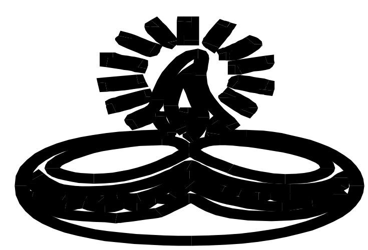

खेल

आर.आर0पाण्डेय 'चैन'

निकी ने चारों सहेलियों को समझाना शुरु किया––नीता! तुम पकड़ी पहन लो और सिख बनो। शिखा! तुम ये गोल पगड़ी लो और शेख बन जाओ। पवित्रा! तुम ये क्रास वाला लाकेट पहन नन बन जाओ। शुचि! तुम ये धोती, कुर्ता, लम्बी टोपी पहन पंडित बन जाओ। फिर तुम सबको आगे का खेल समझाऊं।

ये रखो अपनी धोती, कुर्ता और टोपी। शुचि ने निकी की तरफ उछाला। फिर बोली–मुझे तुम्हारा खेल मालूम है। पहले हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बनाओगी फिर उनको एक साथ रहने को कहोगी जो संभव नहीं।

मैं शुचि के उत्तर का आदि से आज तक के धार्मिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने लगा।

माह नवम्बर एवं दिसम्बर के व्रत एवं त्योहार तिथि वार

पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

दोस्तों हम इस अंक से ज्योतिष का एक नया कॉलम प्रारम्भ कर रहे है। जिसमें हम अंग्रेजी महीने के प्रारम्भ से अंत तक के शुभ मुहूर्तो, विशेष तिथिया, व्रत एवं त्योहार आदि का विवरण होगा। यह हमारा स्तम्भ आपको कैसा लगा। इसके बारें में हमें अवश्य लिखें–

1नवम्बर, शुक्रवार :रम्भा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थ अमृतदायक योग सुवह 9।38 मि0 तक। यात्रा में विशेष शुभफलदायक

2नवम्बर, शनिवार :शनि प्रदोषव्रतम। धान त्रयोदशी। धनवन्तरि जयन्ती। कामेश्वरी जयन्ती। श्री हनुमज्जन्मम्।

3नवम्बर रविवारः नरक चतुर्दशी। भद्र सुबह 7 बजकर 36 मि0 से सायं 6 बजकर 26 मिनट तक। किसी भी शुभकार्य के दिन से वर्जित।

4नवम्बर सोमवार : सोमवती अमावस्या। स्नान–दान श्रद्धादौ अमावस्या। दीपावली। हनुमत्दर्शनम्। दरिद्रानिस्सारण। महावीर निर्वाण दिवस (जैन)। शुक्रोदय पूर्वे सायं 5 बजकर 31 मिनट तक।

5नवम्बर, मंगलवारः अन्नकूट

6 नवम्बर, बुद्धवारः गोवर्धन पूजा। भइया दुइज ।यमद्वितीया। चित्रगुप्त – यमपूजनम्। यमुनास्नानम्। दावात कलम पूजनम्।

7.11.02 बृहस्पतिवार : मु0 रोजा प्रारम्भ। रवियोगः रात्रि 2–32 के वाद (किसी भी कार्य के लिए शुभ)

8.11,शुक्रवारः भद्रा। (सुवह 8/6 से रात्रि 7/20 तक)। वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम। सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ। रवियोग रात्रि 1/52 तक।

9.11.02 शनिवार : सूर्यषष्ठी व्रतम द्वितीय दिनम्। रवियोग रात्रि 1–36 के बाद सभी कार्यो में सफलता देने वाला है।

10.11.02 रविवार : सूर्य षष्ठी व्रतम। रवियोग रात्रि 1.51 तक (सभी कार्यो में महाशुभ)

11.11.02 सोमवार : सूर्य षष्ठी व्रतम पारण। भद्रा सायं 5–45 से रात्रि 5.59 तक। सर्वाथसिद्धि योग सभी कार्यो में शुभ 2.36 के बाद पंचक प्रारम्भ। पंचक में कोई भी शुभ कार्य वर्जित है।

13.11.02 बुद्धवार : अक्षय नवमी।

15.11.02 शुक्रवार : प्रवोधनी एकादशी व्रतं सर्वेषाम।

16.11.02 शनिवार : एकादशी व्रतस्य पारणा दिन 10 बजे तक। प्रदोष त्रयोदशी व्रतम्।

17.11.02 रविवार : पंचक समातिक। दिन 12.36 तक। भद्रा रात्रि 7.53 के बाद श्री वैकुण्ठ चर्तुदशी।

19.11 मंगलवार : स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा। गुरुनानक जयन्ति कार्तिकय दर्शनम्। भद्र 5.36 तक। कार्तिक व्रत नियमादि समाप्ति सर्वार्थ सिद्ध योग सायं 5.38 के बाद सभी कार्यो में शुभ।

20.11.02 बुद्धवार : कार्तिक व्रतस्य पारणा। सवार्थ सिद्ध योग। पूरादिन सभी कार्यो में शुभ।

23.11.02 शनिवार : संकठी श्रीगणेश चतुर्थी व्रतम्, चन्द्रोदय रात्रि 7.46 बजे।

24.11.02 रविवार : सर्वार्थ सिद्ध योग रात्रि 11.52 तक सभी कार्यो के लिए शुभ।

27.11.02 बुद्धवार : सहादते हजरत।

30.11.02 शनिवार : उत्पन्न एकादशी व्रतम सर्वेषाम्।

माह दिसम्बर

2 दिसम्बर, सोमवारः कृष्ण पक्ष द्वादसी–प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि 3 व्रतं। (भद्र सांय 5:36 से रात्रि 4:30तक)

4 दिसम्बर, बुद्धवारः अमावस्या–स्नान दान पुण्यतया। (सर्वार्थ अमृत सिद्ध योग, दिन 11/29 तक) इसमें शुरु किया गया कार्य शुभ फलदायक होता है व पूर्ण होता है।

5 दिसम्बर, गुरुवारः शुक्लपक्ष प्रथमा, पिड़ियन (रुद्रव्रतम्) चन्द्रर्शनम्।

6दिसम्बर, शुक्रवारः द्वितीया ईंद–उल–फितर

7 दिसम्बर, शनिवारः वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्। रवियोगः दिन 9.17 के बाद। सभी प्रकार के कार्यो में सफलता देने वाला श्रेष्ठ योग होता है।

8 दिसम्बर, रविवारः चतुर्थी, भद्रा दिन 8.49 तक। रवि योग। दिन में 9.23 तक।

9 दिसम्बर, सोमवारः पंचमी, द्वितीया नाग पंचमी। स्कन्दषष्ठी 6व्रतम्। गुरुतेगबहादुर शहीद दिवस। रवि योगः 1 दिन 10.00 बजे के बाद। उसके पहले सर्वार्थ सिद्ध योग। (सभी कार्यो में शुभफलदायक)

10 दिसम्बर, मंगलवारः षष्ठी, चम्पा षष्ठी 6 व्रतम् (महाराष्ट्र में प्रसिद्ध) रवियोग, 10.49 तक। द्विपुश्कर योग 9.22 बजे से 11.6 बजे तक। यह पंचक की तरह माना जाता हैं।

15 दिसम्बर, रविवारः एकादशी, मोक्षदा 11दसी व्रतम् सर्वेणाम्। गीताजयन्ती, मौन एकादशी (जैन)। मृत्युवाण दिन 3.31 बे तक। सर्वार्थसिद्धियोग रात्रि 10.11 बजे तक।

17 दिसम्बर, मंगलवारः त्रयोदशी,भौम प्रदोषव्रतम्। सौर पोष मासाराम्भ।

18 दिसम्बर, बुद्धवारः चतुर्दशीः भद्रा रात्रि 10.23 बजे तक। रवियोग रात्रि 4. 47 बजे तक। सर्वाथ सिद्ध योगः यावछिनम्।

19 दिसम्बर, बृहस्पतिवारः पूर्णिमा, स्नानदान व्रतादौ पुर्णिमा।

23 दिसम्बर सोमवारः पौषकृष्ण चतुर्थी, श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्। चन्द्रोदय रात्रि 8.39 तक। सवार्थ सिद्धयोग प्रातः 7.23 बजे तक।

25 दिसम्बर, बुद्धवारः षष्ठी, क्रिसमस दिवस, रवियोगः रात्रि 4.48 बजे तक। भद्रा रात्रि 8.3 बजे के बाद

29 दिसम्बर, रविवारः दसमी। सफला 11दसी व्रतं, स्यार्तानाम्।

30 दिसम्बर, सोमवारः एकादशी व्रतम्, पति–निष्कामग्रति–वनस्थ–विधवा–वैष्णवानाम् एकादशी व्रतम्।

31 दिसम्बर, मंगलवारः त्रयोदशी, भौम प्रदोष 13 व्रतम्।

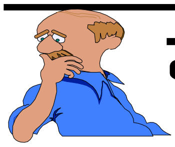

मत रोओ मेरे भाई

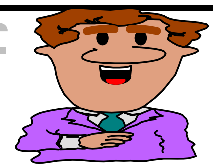

पति–पत्नी

1. पत्नीः अगर चिराग लेकर भी ढ़ढ़ोंगे, तो तुम्हें मुझ जैसी सुघड़ और होशियार पत्नी नहीं मिलेगी।

पति : "काश चिराग लेकर ढूढने की बात मुझे शादी से पहले पता चल जाती।"

2. पत्नी : आखिर तुम कैसे कह सकते हो कि 13 का अंक तुम्हारे लिए अशुभ है।

पतिः क्योंकि आज से 13 साल पहले 13 तारिख को ही हमारी शादी हुई थी।

3. पतिः उस आदमी से बड़ा मूर्ख कोई नहीं, जो निहायत खूबसूरत महिला से शादी करता है।

पत्नी– मेरी तारीफ के लिए शुक्रिया।

4. और सुनाओं, क्या हॉल है?

कुछ न पूछो यार, आनी किस्मत में तो चक्कर ही चक्कर है।

क्या मतलब?

शादी के पहले उसके घर के चक्कर लगाए। शादी के समय अग्नि के चक्कर लगाए। अब तलाक के लिए कोर्ट के चक्कर लगा रहूँ।–जबाब मिला।

5. युवक– देखो, हमारी मंगनी की बात हमारे बीच ही रहे। किसी को भी खबर न होने पाए।

मंगेतकर–अवश्य, मैं अपने मित्रों व रिश्तेदारों से कह दूँगी कि वे किसी से भी यह बात न कहे।

अन्य

6. कविः मै मंच पर एक गीत गा रहा था कि किसी ने जूता फेंक दिया।

अरे, फिर तुमने क्या किया?–मित्र ने पूछा।

करता क्या, एक जूता तो मेरे लिए बेकार ही था। फिर मैने एक गीता और गाया– कविवर ने जवाब दिया।

7. दो आदमी जेवरात की दुकान के सामने खड़े शोरुम में रखे जेवरों के डिब्बे देख रहे थे। उनमें से एक ने हीरे के डिब्बे की ओर इशारा करते हुए दूसरे ने पूछा– यह हीरा कैसा है?

बहुत सुंदर–दूसरा बोला।

हमें इसके कितने मिल सकते हैं?–पहले ने पूछा।

यही पांच से लेकर सात साल तक। वैसे तो जज पर ही निर्भर करता है कि कितना दे। –दूसरे ने जवाब दिया।

8. एक बैंक में चोरी हुई। जब चोर पैसे बटोर कर चलने लगा, तो मैनेजर गिड़गिड़ाया–बैंक के हिसाब में साठ लाख की गड़बड़ी हैं। कृपया उधर वाले चारों लाल रजिस्टर भी लेते जाइए।

9. एक व्यक्ति ने कवि से अपने मित्र का परिचय कराया–इनसे मिलिए, ये हैं राकेश नाथ। इनका अंडों का बहुत बड़ा काम है। बेचने का या फेंकने का?–कवि ने उत्सुकता से पूछा।

इस कॉलम में आपभी बेहतरीन चुटकुले भेज सकते है। हम अच्छे चुटकुलों को ईनाम देगे।

अंकुर

अशोक कुमार गुप्ता

मेरे अन्तःस्थल में, इस गहरे और घोर भूमण्डल में
कोई वो न था, ना ख्वाब में, ना ही हकीकत में
फिर क्यों आये इस जीवन में
ज्योतिर्मय सजल सबेरा बन,
तुम्हें देख ये पलकें हट न सकी
हैं ओज से मेरे कमलनयन,
प्रतिपल गहराता प्रेम वेग क्यूँ
बहा रहा मन को अविरल
रुहों में है क्यों जज्ब हो रहा
खण्डित मन शीतल शीतल
तुम कौन हो, हम ना समझ सके
सोये–सोये क्यो, ख्वाब जगे
अंकुरित हुआ क्यों प्रेम बीज
क्यों तुम मुझे अपने आप लगे
तुम डरते हो अन्तर्मन से
मेरी ओर कभी देखा ही नहीं
चाहत से भरा ये अमर कलश
तुमको इसका अहसास नहीं

ईश्वर शरण शुक्ल

हम शांतिवादी है
प्रगतिवादी है
पर विनाश वादी नहीं
हम सौहार्द वादी है
पर दखलवादी नहीं
हम मित्रतावादी है
अहिंसा वादी हे
पर हिंसा वादी नहीं
हम समझौतावादी है,
मानवतावादी है
पर कटुता वादी नहीं
हम दयावादी है
करुणा वादी है
पर आतंकवादी नहीं
हम सिद्धांतवादी है
सद्भाव वादी है
पर विखराव वादी नहीं।

मधुमेह रोग और बचाव

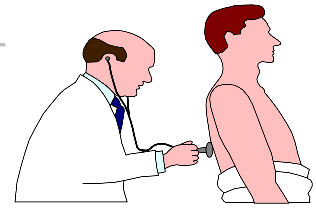

डा. कुसुमलता मिश्रा
मुख्य संयोजिका एवं चिकित्सका, प्राकृतिक चिकित्सा, मारवाड़ी धर्मशाला से सम्बद्ध।

एक्यूप्रेशर से बचावः

एक प्राकृतिक उपचार पहले के लोगों में यह बीमारी कम पाई जाती थी। वे प्रकृति से जुड़े होते थे। खटरस व्यजंन करते थे। जिसमें मीठा, तीता, नमकीन, खारा, कसैला, कड़ुआ, खट्टा किन्तु आधुनिकता ने सिर्फ दो ही स्वाद ग्रहण किया मीठा और नमकीन। फलस्वरुप हम दो भयानक बीमारियों के पुतले बन कर रह गये मधुमेह और उच्च रक्त चाप। ये रोग मीठा और नमक से ही प्रखर हुए है। कसैला, कड़ुआ, खारा रस जो इस रोग के दुश्मन है उन्हें हमने अपनी थाली से अलग कर दिया। फास्ट फुड, जैम, अचार, मुरब्बे फ्रिज में रक्खा खाकर अपने पाचक अंगों की जीवनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं।

हमारे मनीषियों ने हमारे समक्ष हजारों वर्ष पुरानी विधा जिसे एक्यूप्रेशर के नाम से विदेशी अपने स्वास्थ्य रुपी धन को सहेजे हैं हम मूर्ख भारतीय उनका अनुकरण कर अपनी सम्पदा और स्वास्थ्य दोनों खो रहे है।

पानी खीचकर रस्सी द्वारा पीना, खुरुपी चलाना, फरसा चलाना, मसाले पीसना, जाता, चकरी चलाना। जब होता था तो न रक्त चाप था न मधुमेह। भौतिकता ने हमें प्रकृति से दूर कर हमें अपंग बना दिया। मित्रों आज इस सुरसा सी बढ़ती बीमारी से लड़ने के लिए हमें पुनः एक जेहाद छेड़ना होगा जो प्राकृतिक चिकित्सा से हमारी आने वाली पीढ़ी को उबारेगा।

प्रथम– हमारें दोनों हाथ पैर एक स्विच बोर्ड है और हमारा शरीर एक मकान। रोग ने हमारे अन्दर अंधेरा कर दिया है। हमें अपने हाथ पैर कलाई को मसाज करना है एवं कुछ बिन्दुओं को प्रतिदिन दबाना है। इससे हमारी प्रतिरोधक शक्तियां जगेगी। सारे अंग अपने कार्य करेगें और हम निरन्तर स्वस्थ होते जायेगे।

संकेतः हमारे हाथों के जितने पर्वत है वे एक–एक अंगो के सादृश्य है जैसे बृहस्पति पर्वत एड्रिनल, बुद्ध पर्वत पेनक्रियाज, कलाई के बीचाबीच लिम्फ मंगलपर्वत शुक्र, दाये हाथ में गाल ब्लेडर, बायें में स्पिलीन, हथेली के बीचोबीच किडनी, पर्वत हमारे शरीर का वैरोमीटर है। यह यदि यहा दर्द है तो निश्चित हम बीमार है। इन सब पर प्रतिदिन दबाब दें कम से कम 20 मिनट कंकरीली जमीन पर नंगे पॉव चले। ताली बजायें एवं अर्ध्यमत्येन्द्र आसन करें, अधिक जानकारी के लिए तमाम एक्यूप्रेशर सेंटर है। वहॉ सम्पर्क करें। लाभ अवश्य मिलेगा।

आसनों द्वारा बीमारियों का इलाज

आज के आपाधापी के माहौल में मानव विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होता जा रहा है। एलोपैथिक दवाएं हमें तात्कालिक फायदा तो पहुचाती है लेकिन साथ में एक नई बीमारी को जन्म दे देती है ऐसे में हमें पुनः पुरातन कालीन चिकित्सा की ओर मानव दिन प्रतिदिन अग्रसित हो रहा हैः

1.बदहजमी व गैस के रोगः पश्चिमोत्तान, बज्र, पवनमुक्त, हल, मयूर, उड्डियान बंध, कपालभॉति, नौलि।

2.पुरानी कब्ज : मकर, उत्तादपाद, सर्वांग, कपालभॉति, सहज नाड़ी शोधन, अनीमा।

3.बवासीर : सर्वांग, मत्स्य, शलभ, धनुर, मकर, मूल बंध, उज्जायी, नाड़ी शोधन, अनीमा

4.मधुमेह : हल, पश्चिमोत्तान, चक्र, अर्धमत्स्येन्द्र, सर्वांग, शीर्ष, जानुसिर, सुप्तवज्र, मयूर, उड्डियान बंध, नाड़ी

शोधन, आंतरिक कुम्भक।

5.मुटापा : पश्चिमोत्तान, अर्धमत्स्येन्द्र, मत्स्येन्द्र, सर्वांग, मयूर, धनुर, सुप्तवज्र, उड्डियान, बाहय कुम्भक, नौलि, कपालभॉति।

6.वीर्य सम्बन्धी : पश्चिमोत्तान, जानुसिर, धनुर, शीर्ष, अर्धमत्स्येन्द्र, सिंह, मूल, बंध, उड्डियान बंध, नाड़ी शोधन, आंतरिक कुम्भक, सिद्ध, बद्धपद्म, गोरक्ष, ध्यान।

7.हाई ब्लड प्रेशर : सुप्तवज्र, सिद्ध, पद्म, हल, मत्स्य, शिथिल, पश्चिमोत्तान, नाड़ी शोधन (कुम्भक के बिना), ध्यान, उज्जायी, शव, भ्रामरी।

8.लो ब्लड प्रेशर : सर्वांग, हल, कर्णपीड़, पश्चिमोत्तान, वज्र, पद्म, सिद्ध, नाड़ी शोधन, नेति, कुंजल।

10.गले के रोगः जलनेति, सूत्रनेति, मत्स्य, सुप्तवज्र, सिंह, सर्वांग, जालंधर बंधा, उज्जायी, शीतली, शीतकारी, नेति।

11.नाक, कान, गला : जलनेति, सूत्रनेति, घृतनेति, मत्स्य, शीतली, शीतकारी, सर्वांग, जालंधर बंध, उज्जायी भ्रामरी।

12.धरण : हस्तपादोत्तान, धनुर, चक्र, गर्भ, नाड़ी शोधन।

13.यकृतः उष्ट्र, कमरचक्र, हल, गर्भ, मयूर, सर्वांग, नौलि, उड्डियान, नाड़ी शोधान, योगमुद्रा, कुंजल।

14. सिर दर्दः पश्चिमोत्तान, हल, सर्वांग, शव, सहज नाड़ी शोधन।

15.हरनिया (नाभि)ः सुप्तवज्र, मत्स्य, हस्तपादोत्तान, पश्चिमोत्तान, सर्वांग, उड्डियान बंध, कपालभॉति।

16.हरनिया(मसाना)ः मत्स्य, हस्तपादोत्तान, सर्वाग, उड्डियान, कपालभॉति।

17.जोड़ो का दर्दः पद्म, वज्र, पश्चिमोत्तान, आकर्णधनुर, अर्धमत्स्येन्द्र, सर्वांग, उज्जायी, भस्त्रिका, सूर्यभेदी।

सूर्य की किरणों के हानिकारक प्रभाव से बचाती है काले रंग त्वचा

डॉ. जी.एन.दूबे

त्वचा को रंग की प्राप्ति कुछ रासायनिक पदार्थो की त्वचा में उपस्थिति के कारण होती है जिनमें मैलनिन, आक्सीहिमोग्लोबिन, रिडियूस्ड हिमेग्लोबिन, कैरोटिन आदि प्रमुख है। इन सभी पदार्थो में भी मैलानिन मुख्य भूमिका अदा करती है। अगर मनुष्य की त्वचा में मैलनिन की मात्रा अधिक हो तो उसका रंग काला हो जाता है और इसके विपरित मैलनिन की त्वचा में अल्प मात्रा के कारण रंग गोरा होता है।

त्वचा का रंग मैलानिन की संख्या तथा इसकी त्वचा में उपस्थिति एवं त्वचा के रंग के पारस्परिक संबंध का अध्ययन सूक्ष्मदर्शी द्वारा 'नीग्रे अमेरिकन' लोगों में किया गया। इस अध्ययन से अलग–अलग रंगो के लोगों की त्वचा में मैलानिन की संख्या तथा इसकी स्थिति में अनेक प्रकार की भिन्नता पाई गई। इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि गोरी रंग की त्वचा में मैलानिन केवल त्वचा की ऊपरी सतह पर ही उपस्थित था जबकि गाढ़े काले रंग की त्वचा में चमड़ी की प्रत्येक सतह इससे भरपूर थी। एक साधारण त्वचा तथा त्वचा रंग संबंधी अनेक प्रकार के रोगों अध्ययन से यह पता चलता है कि त्वचा को रंग प्रदान कने में मैलानिन की त्वचा के अंद की स्थिति भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

यदि मैलानिन अलग–अलग होकर त्वचा में स्थित हो तो त्वचा का रंग श्वेत होगा पर परन्तु मैलानिन का एक ही स्थान पर, त्वचा में इकट्ठा हो जाना इसे काला रंग प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर आस्ट्रेलिया को लोगों की चमड़ी में मैलानि की स्थिति अलग–अलग होकर होती है। इसलिए उनकी त्वचा के अंदर एक समूह में एकत्रित होकर त्वचा को काला रंग प्रदान करता है। मैलानिन की अधिक मात्रा में उपस्थिति के कारण काले रंग की त्वचा के कुछ लाभ भी है। यह त्वचा को सूर्य की रोशनी में उपस्थित पराबैंगनी (अल्ट्रावॉइलेट) किरणों के हानिकारक प्रभाव से बचाती है। मैलानिन की ज्यादा मात्रा में उपस्थिति के कारण त्वचा का धूप में जलने से भी बचाव होता है तथा काले रंग की त्वचा का कैंसर हो जाने का खतरा भी कम होता है। इन सभी तथ्यों से पता चलता है कि त्वचा के रंग का निर्धारण वैज्ञानिक तत्वों पर आधारित है और इसे किसी भी प्रकार से बदला नहीं जा सकता अर्थात मैलानिन की मात्रा जो त्वचा में जन्म से ही उपस्थित रहती है, उसे हम कृत्रिम रुप से कदापि नहीं बदल सकते है।

18. हृदय रोगः उज्जायी, सहज नाड़ी शोधन(कुम्भक नहीं), ध्यान, शव।

19.अनिद्राः जानुसिर, पश्चिम, सूर्य नमस्कार, सर्वांग, भस्त्रिका, नाड़ी शोधन, ध्यान, शव।

20.गुर्दे की दर्दः शलभ, धनुर, जानुसिर, मयूर, मत्स्य, अर्धमत्स्येन्द्र, नौलि, मूलाधार, उड्डियान, कपालभॉति, नाड़ी शोधन, योगमुद्रा, कुंजल।

21.फेफड़ेः मत्स्य, सुप्तवज्र, सर्वांग, पश्चिमोत्तान, उज्जायी, शीतली, शीतकारी (कुम्भक नहीं), नेति।

22.मासिक धर्म आदिः धनुर, योगमुद्रा, मत्स्य, सुप्तवज्र, पश्चिमोत्तान, गर्भासन, उड्डियान, कपालभॉति, सहज नाड़ी शोधन।

23. शिथिलता (स्नायु की)ः पश्चिमोत्तान, मकर, हल, सर्वांग, पद्म, गर्भ, नाड़ी शोधन, ध्यान, भ्रामरी, कपालभॉति।

जब आपसे गलती हो जाय

ज्योति नगरिया

ग़लती तो बस ग़लती है, हो ही जाती है। कोई भी अछूता नहीं इससे जिसने कभी-कभी कोई भारी ग़लती न की हो, और कभी कभी तो इतनी बड़ी कि हम ख़ुद अपने किये से चौंक जाते हैं।

इसमें शक नहीं कि एक बार जो नुकसान हो गया वह लौटाया तो नहीं जा सकता। लेकिन इतना जरुर किया जा सकता है कि उस घटना के टूटे टुकड़े उठाकर हम उन्हें जोड़ने की कोशिश करें। भाग्य से ऐसे रास्ते है जिन पर चलकर कुछ सुधार किया जा सकता है। गलती को भी, और अपने को भी।

1.कह डालिये : अक्सर शर्मिंदा होने के बाद हम सभी एक छोटा-सा वाक्य कह कर 'अरे भूल हो गई' या कहके बात को ख़त्म कर देना चाहते है, लेकिन इतने से बात कभी-कभी बनती नहीं। एक सही पश्चाताप के अलावा हमें एक दूसरे के साथ बैठकर बात साफ कर लेनी चाहिये। औद्योगिकी मनोवैज्ञानिक माइकिल मसरान्ड यह कहते है कि ध्यान इस बात पर होना चाहिये कि समस्या को अत्यन्त भावुकता से न सुलझा कर उसे वयस्कता और गम्भीरता से हल किया जाये।

2.अपनी सही-सही भावनायें व्यक्त कीजिये- जिसके प्रति गलती हुई है, अगर वाकई उसे लग जाता है कि आप बेहद शर्मिन्दगी व पछतावे में है तो बहुत कुछ उसका क्रुद्ध मन शांत हो जाता है। मैडम एटीकेट कही जाने वाली प्रसिद्ध महिला जूडिथ मार्टिन कहती है-"अधिकतर लोग बहुत समझदार होते है, यदि आप वाकई अपने आप को गलती पर कोस रहे होते है तो वह बड़े दिल के साथ माफ भी कर दत ह।

3.टाट मटोल मत कीजिएः "देखिए गलती सब से होती है और सही क्षमा याचना दोनों ही पक्षों की तनावी स्थिति कम करती हैं।" मनोवैज्ञानिक सी.आर. सिन्डर (इस विषय पर दो किताबों) के लेखक कहते है "जब आपकी याचना से यह लगने लगता है कि यह भूल अब आपसे दूबारा न होगी तो मामला शांत हो चलते है लेकिन ध्यान रखिये अगर आप अफसोस की जगह

लीपापोती या टाल मटोल कर रहे हैं तो बात बनती नहीं, बल्कि और बिगड़ भी सकती है।

4. भरपाई करने की कोशिश कीजिएः क्षमा याचना और पश्चाताप के बाद कोशिश कीजिए कि पूर्व की भॉति वापिस लौटाई जा सकती है, क्या स्थिति ? या कोई घाटा भरा जा सकता है ? कोई दस्तावेज खो जाता है जिसकी प्रति मिल सके या दुर्घटना ग्रस्त वाहन की मरम्मत करवाई जा सके। ऐसी गलतियों को तो खामियाजे के साथ सुधारा जा सकता है लेकिन जिस चीज की कीमत किसी भावना से जुड़ी हो (जैसे कि किसी ने कोई कलम ही किसी को भेंट किया था और वह खो गया।) उन्हें लौटाया तो नहीं जा सकता पर हॉ अपनी हार्दिक संवदेना प्रकट करने के लिए उनके भावों का आदर कर कुछ साथ चला जा सकता है। भावनात्मक भरपाई से ही मन हलका होता है।

5.नियति का सहारा भी लेना बुरा नहींः कभी कभार ऐसी भी घटना गलती वश घट जाती है जो दिल दिमाग से उतरती नहीं, भाग्य विशेषज्ञ फ्रेंक फारलें कहते है-कभी-कभी घटनाओं पर अपना भी काबू नहीं होता, बस वह तो अनजाने घट ही जाती है, ऐसी स्थितिओं में भाग्य या नियति का सहारा ले लेना कोई बुरी बात नहीं।"

6.ग़लती से सीख लीजिएः ग़लती हो जाना कोई अमानुषिक कृत्य नहीं पर हॉ भविष्य के लिए उससे सीख न लेना गैर इंसानियत है। एक साहब तो अपनी गलतियों की तेरही-बरसी जैसी मनाया करते थे। उस आदमी को फोन कर, या माफीनामा लिख कर जिसके प्रति उनसे ग़लती हुई थी, और अक्सर उन्हें जवाब भी मिल जाया करते थे, "अरे छोड़ो भी यार! मैने तुम्हें कब का माफ कर दिया।"

बधाई हो

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन / शादी शादी वर्षगांठ / होली / परीक्षा पास करने पर / नौकरी प्राप्त करने पर / प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

इधर–उधर की

सिगरेट और कोकीन की लत छुड़ाने वाला टीका

दुनिया भर में हर साल लाखो सिगरेट से होने वाली बिमारियों से मरते है। फिर भी सिगरेट पीने वालों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। दूसरे नशे की तरह सिगरेट पीने की लत भी बड़ी मुश्किल से छूटती है। ब्रिटेन की एक बायोटेक्नोलॉजी कंपनी ऐसा टीका तैयार कर रही है जो सिगरेट के नशे से निजात दिलाएगा। यह टीका इंजेक्शन के रुप में दिया जाता है। इस टीके के असर से सिगरेट में पाई जाने वाली निकोटीन इनसान के दिमाग में प्रवेश नहीं कर पाती है। जिसके कारण उसकी सिगरेट की तलब कम होती जाती है।

हालांकि इस टीके के कारगर साबित होने में विज्ञानियों को अभी कुछ वर्ष लग सकते है।

खतरों की घंटी है रात की पाली

वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन के दौरान पाया कि रात की पाली में काम करने वालों को हार्ट अटैक खतरा ज्यादा रहता है। उनका कहना है कि इससे शरीर पर अधिक दवाब पड़ता है, जिससे दिल की लय असमान्य हो जाती है और हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। दिन में काम करने वाले चार सौ कर्मचारियों और राम में काम करने वाले इतने ही कर्मचारियों की बीच तुलता करके नीदरलैड के वैज्ञानिकों ने नतीजा निकाला है कि ऐसे लोग, जो अनियमित ड्यूटी करते है उनके दिल की धड़कन असमान्य हो जाती है। इसे प्रीमैच्योर वेंट्रीकुलर कॉम्पलेक्स भी कहा जाता है। रात्रि की पाली में काम करना स्वचालित तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालता है, जिससे दिल की सामान्य गति प्रभावित होती है।

बिना ऑखो के टाइपिंग

विकास शोरेवाला देख नहीं सकता, इसके बावजूद उसने टाइपिंग में निपुणता हासिल की और पिछले साल इसकी परीक्षा दने की तैयारी भी कर ली, लेकिन महाराष्ट्र सरकार ने उसे इसकी इजाजत नहीं दी। 26 वर्षीय विकास सरकार के इस रवैये से हताश नहीं हुआ और हाई कोर्ट तक जा पहुँचा। अब एक साल बाद वह अपनी लड़ाई जीत कर परीक्षा देने की तैयारी कर रहा है।

हाईकोर्ट ने पुणे के महाराष्ट्र राज्य परीक्षा मंडल को आदेश दिया है कि विकास को एक रीडर की सहायता से परीक्षा देने की इजाजत दी जाए।

मुबंई विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातक शोरेवाला ने टाइपिंग की परीक्षा देने के लिए मार्च 2000 में गवर्नमेंट कॉमर्शियल सर्टिफिकेट एग्जॉम के दफ्तर में आवेदन किया था, लेकिन उसे इसकी अनुमति नहीं दी गई।

इनकार के 125 साल बाद खुद ही छापा कहानी

अटलांटिक मंथली नाम एक पत्रिका ने मशहूर लेखक मार्क ट्वेन की एक कहानी छापने से इनकार कर दिया था। लेकिन 125 साल बाद उसी पत्रिका ने उस कहानी को प्रकाशित किया।

एक शादी फोन पर

दुनिया वाकई करीब आ गई है। नहीं तो ऐसा भला कैसे हो सकता था कि दूल्हा दुबई में हो दुल्हन चेन्नई में और दोनों की शादी हो जाए। विवाह की यह रस्म टेलीफोन पर पूरी की गई। यह अनोखी शादी कुछ नया करने के शौक में या किसी नई परम्परा की शुरुआत करने के लिए नहीं बल्कि परिवार के सम्मान को बचाने के लिए की गई। दुबई में बिजली मैकेनिक का काम करने वाले 28 वर्षीय मोहम्मद मुस्तकीन को खबर मिली कि दूर के रिश्ते में उसकी बहन लगने वाली 21 वर्षीय अमीना की शादी होते–होते रह गई है। शादी से पहली रात ही उसका होने वाला दुल्हा घर छोड़कर भाग गया। आमतौर पर रुढ़िवादी परिवारों में अगर इस तरह की घटना हो जाए, तो लड़की को दोषी ठहराया जाता है और उसके परिवार को अपमान का सामना करना पड़ता है। यह खबर जब दुबई में बैठे मुस्तकीन को मिली, तो उसने अमीना से निकाह करने का फैसला कर लिया। शादी के बाद दोनों ने इंटरनेट पर एक–दूसरे से बात की और भविष्य की योजनाए भी बनाई।

थोड़ा हट के

इंग्लैड में हर्टफोर्डशायर के 10 वर्षीय बालक जेमी रीड के सकूल आते–जाते समय डेविड नाम का एक कबूतर उसका पीछा करता है।

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए:

एम0टेक0 कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धूस्सा, पो0 पीपलगांव, इलाहाबाद

आपकी जुबान

पत्रिका के कवर पर सितम्बर माह जैसा चित्र ने दे

सेवा में,

श्रीमान सम्पादक महोदय,

मैं पत्रिका को गत नवम्बर माह से स्थाई गाहक हुँ। हम लोगों के मन में इसके प्रति एक अलग विचार है। आपने सितम्बर माह में कवर पेज पर जो चित्र दिया था वह हम लोगों को अच्छा नहीं लगा। आप एक सामाजिक पत्रिका का संचालन कर रहे है। यह हमारे परिवार में सबकी चहेती पत्रिका है। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आगे से इसका ध्यान रक्खे। पत्रिका दिन–प्रतिदिन सुधार हो रहा है। हमें उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि यह जल्द ही एक अलग मुकाम हासिल कर लेगी। पत्रिका परिवार को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं। भवदीय

डॉ. आर.पी. सिन्हा

अल्लापुर, इलाहाबाद।

पत्रिका दिन–प्रतिदिन निखरती जा रही है।

प्रिय द्विवेदी जी

मैं पत्रिका का वार्षिक सदस्या हुँ। जो मैं विगत सितम्बर माह में बनी थी। जिस समय पत्रिका को देखकर ऐसा लगा रहा था कि मेरा पचास रुपये बेकार चला गया। मैं एक दोस्त के कारण इसकी सदस्य बनी थी। मगर जनवरी अंक से इस पत्रिका में मानों निखार आ गया हो। हर अंक अपने आप में एक नया सुधार व कलेवर लिए हुए रहता है। लगता है जैसे किसी नये पेड़ को पर्याप्त मात्रा में खाद–पानी दिया जा रहा हो। अक्टूबर का अंक तो एकदम नये कलेवर को साथ लिए हुए था। एक कमी है वह यह है कि खेल और साथ ही कुछ कहॉनिया और डालने का कष्ट करें। आपकी अति महानता होगी।

प्रिया जायसवाल

मिर्जापुर

तारिफ पढ़कर बुराई कने बैठी और तारिफ कर बैठी।

सेवा में,

संपादक महोदय

मैं एक दिन अपनी सहेली घर गयी हुई थी वहां मुझे 'विश्व स्नेह समाज' का सितम्बर 02 का अंक पढ़ने को मिला। आपका जबाव कॉलम में श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के उपन्यास पर लिखे गये पत्र "अब दिल हीं नही लगता, दिल के पैगाम के बिना" पढ़कर ऐसा लगा कि ये पत्र लड़कियों ने चापलुसी बस लिखी है। मैंने उसी समय निश्चय किया कि मैं अब तक प्रकाशित इस उपन्यास के सारे भाग को पढ़ूँगी और इसकी इतनी बुराई लिखुगी कि पत्र लिखने वालो को ठेस लगेगी ही साथ ही साथ लेखक को भी मिर्ची लगेगी। । शायद ऐसा होगा कि मेरा पत्र संपादकीय परिवार छापता भी नहीं। मैं अपनी सहेली से सारे अंक को पढ़ने के लिए मांगी। और जैसे–जैसे पढ़ती गयी मेरे सारे प्लान पर पानी फिरता गया। और आज मैं यह कहने और लिखने को मजबूर हो गयी है कि वाकई उपन्यासकार तारिफे काबिल है। इसमें शक की कोई गुजाईश ही नहीं बचती। आप लोग इस उपन्यास को छपवाकर प्रकाशित करवाएं मैं तो अवश्य खरुदूगी। साथ ही साथ अपनी सहेलियों को भी खरीदने पर मजबूर कर दूँगी। पत्रिका में नौलाख अहमद सिद्दीकी का समाज और पुलिस, जया द्विवेदी का मैनें तुम्हे खरीदा, महिलाओं के कानूनी अधिकार आदि भी हमें बेहद पंसद आए।

शशि प्रभा सिंह

सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

खुला ऑफर खुला ऑफर खुला ऑफर

पत्रिका के सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रुपये के ईनाम

समय पर मासिक पत्रिका

"विश्व स्नेह समाज"

आपके दरवाजे पर। इस सुविधा का लाभ उठाइये और अपनी चहेती पत्रिका को घर बैठे पाइये।देर मत कीजिए।

भारत में:मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00, (रजि0 डाक) रु0 100/00

विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150/00

आजीवन सदस्य : रु0 1100/00

भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर / डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20/00 अतिरिक्त राशि देय होगी।

कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। **प्रधान संपादक**

मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**"

एम0टेक0कम्पयूटर एजुकेशन सेन्टर,

धुस्सा, पीपलगांव, इलाहाबाद

भेजने वाले का नाम :........................

....

डाक का पता : ....

इलाहाबा

मुंबई ब्यूरो

अमिताभ के जन्मदिनपर

अंदाज अमिताभ के

अमिताभ बच्चन के अंदर क्या है ये तो वहीं जाने लेकिन हकीकत है कि उन्हें अब च्यवनप्राश खाने की कोई जरुरत नहीं है। उन्हें साठ साल का बूढ़ा कहना कुछ नागवार नहीं गुजरेगा। 11 अक्टूबर को अपने जीवन 60 बसन्त पूर्ण कर चुके अमिताभ के काम ने आज भी उन्हें लोगों के दिल में जगह सुरक्षित रक्खी है।

वे अपनी सफलता का सारा श्रेय माता–पिता के आर्शीवाद और ईश्वर की कृपा को ही देना चाहते है। वे अपने प्रशंसको की इस बात के लिए प्रशंसा करते है कि उनके स्नेह ने उन्हें विपत्तियों से उबारा है। उनके लिए हमेशा प्रशंसको नें प्रार्थनाएं तक की है।

अनुशासित रहने में उन्हें बेहद आनन्द मिलता है और यही अनुशासन उन्हें अपने काम के प्रति चुस्त–चौकन्ना रखता है। उनका मानना है कि सही मायने में सिनेमा का काम मनोरंजन है। इसी के बल पर आज इंडस्ट्री करोड़ो का कारोबार कर रही है।

उन्हें एंग्री यंग मैन की इमेज से छुटकारा मिल जाने से बेहद राहत है। अब उन्हें विभिन्न तरह की भूमिकाओं को निभानें रहना उन्हें ज्यादे छूट मिल रही है। एंग्री यंग मैन की भूमिका से नुकसान के साथ ही साथ ही फायदा भी पहुँचा है। इनके प्रेरणा स्रोत दिलीप साहब रहे है। उन्हें अपनी फिल्मों में अग्निपथ की भूमिका अच्छी लगी।

उनका कहना है–"मैं दर्शकों की अपने प्रति दिवानगी देखकर कभी–कभी दंग रह जाता हुं। ऐसा नही है कि सिर्फ मेरे प्रति ही लोंगो की यह दीवानगी है, किसी भी लोकप्रिय अभिनेता के लिए करोड़ो लोग उत्सुक देखे जा सकते है। हमारे देश मे तो इस दीवानगी की अति है। मैं नियति में पूर्ण विश्वास रखता हुं। मेरा मानना है कि कोई न कोई शक्ति हमें संचालित कर रही है। उसकी ईच्छा के बिना हम चाहकर भी कुछ नही कर पाते। एबीसीएल इसका एक उदाहरण है।"

कुछ ख़ास अंदाज अमिताभ के

जंजीरः ये तुम्हारे बाप का घर नहीं, पुलिस स्टेशन है, इसलिए सीधी तरह खड़े रहो।

दीवारः 0 सपने भी समुंदर की लहरों की तरह हकीकत की चट्टानों से टकराकर टूट जाते है।

0 सौदा करना आपको नहीं आता, आप इस बिल्डिंग के लिए दस लाख भी ज्यादा मांग लेते, तो मैं खरीद लेता। ये बिल्डिंग मेरी मां के लिए एक तोहफा है।

त्रिशुलः 0 सही बात को सही वक्त पे किया जाए तो उसका मजा ही कुछ और है। और मैं सही वक्त का इंतजार करता हूं।

0 जिसने पच्चीस साल से अपनी मां को थोड़ा–थोड़ा मरते देखा हो, उसे मौत से क्या डर।

शराबीः 0 मूंछे हो तो नत्थूलाल जैसी वरना ना हों।

0 जिंदगी का तंबू ती बंबुओं पर टिका है। शराब, शायरी और आप।

मुकद्दर का सिकंदरः 0गोवर्धन सेठ समुंदर में तैरने वाले कुओं और तालाबों में डुबकी नहीं लगाया करते हैं।

0 और वैसे ही, मैं इसको यहां नहीं मारुंगा, वरना लोग कहेंगे, सिकंदर ने अपने इलाके में उसे मारा।

कालियाः0 वक्त की बिसात पे किस्मत ने जो मोहरे बिछाए थे, उनका रुख पलट गया।

0 हम जहां पे खड़े हो जाते है, लाइन वहीं से शुरु हो जाती है।

शहंशाहः रिश्तें मे तो हम तुम्हारे बाप लगते है, नाम है शहंशाह।

कुलीः जिसके सीने मे दिल हीं नहीं, उसे दिल का दौरा कैसे पड़ेगा।

डॉनः डॉन को पकड़ना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

लावारिसः अगर अपनी मां का दूध पिया है, तो सामने आ।

शक्तिः हमारे देश में काम ढ़ढना भी एक काम है।

शोलेः 0तुम्हारा नाम क्या है बसंती?

0घड़ी घड़ी ड्रामा करता है साला।

सत्ते पे सत्ताः दारु पीने से लीवर खराब हो जाता है।

अग्निपथः ये टेलीफोन भी अजीब चीज है। आदमी सोचता कुछ है, बोलता कुछ है और करता कुछ है।

0 पगार बढ़ाओं... पंद्रह सौ रुपये में घर नहीं चलता, साला ईमान क्या चलेगा।

हाबाद

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स

53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016

हमारें यहाँ सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स समानों की रिपयेरिंग की जाती है।

, प्रो0 हरिशंकर शर्मा

ममता क्लिनिक

डॉ0 शंकर मिश्रा (B.Sc, B.A.M.S)

क्या आप अपने खराब स्वास्थ्य से चिंतित है?

अधिक वज़न से परेशान है? कम वज़न से परेशान है?

थकान रहती है? तनाव अधिक रहता है?

इन सबका इलाज

100% गारण्टी के साथ मिले।

कोई साइड इफेक्ट नहीं।

पता : डॉ0 शंकर मिश्रा

69, शिवकुटी, गोविन्दपुर चौराहा के पास, इलाहाबाद

फोन ☎ : 0532–541601

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए विन्टर कोर्स प्रारम्भ है।

इग्नू द्वारा संचालित :

एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं अन्य कोर्सेस : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करें:

0 एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,

कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

शाखाः एम.टेक. कम्प्यूटर सेन्टर, चाचकपुर रोड, सिपाह, जौनपुर

चाईनीज तकनीक से बना

जील ट्रान्सपैरेन्ट साबुन एण्ड वाशिंग पाउडर

नोटः

वितरक रहित क्षेत्रों मे वितरक के लिए सम्पर्क करें।

में0:एम.ए. एण्ड ब्रदर्श

501/2, करेली,

फोनः 551755, 654040

अरुण कुशवाहा फोन : 652106

भारतीय जीवन बीमा निगम

विशिष्ट सदस्य क्लब अभिकर्ता

शाखा कार्यालयः नगर शाखा (प्रथम) चतुर्थ तल, इन्दिरा भवन, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

निवासः 56/40, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद

☎:616521

चित्रांश स्टूडियो

चित्रांश टाइप इन्स्टीट्यूट

115ए/1ए, भावापुर, बेनीगंज, इलाहाबाद

हमारें यहाँ शादी के अवसर पर विडियोंग्राफी, फोटोग्राफी, लंहगा, गहना, मेकअप, मेंहदी, कार, स्टेज सजाने मण्डप सजाने की सुविधा है।

प्रो0 सुधीर कुमार श्रीवास्तव